

9
10
23.05.2023

Head
Department of Sanskrit
Kalinagar Mahavidyalaya

पश्चिमवङ्ग-राष्ट्रिय-विश्वविद्यालयाधिनस्य

कालिनगरमहाविद्यालयस्य

संस्कृतविभागे

२०२३तमे शिक्षावर्षे

DSE ६ पाठक्रमे

प्रकल्पकार्यम्-

प्रकल्पनाम-

काव्यालंकारसप्तवृत्ति

मूलविषयवस्तुः

अध्येतृनामः - नमिता-मण्डलः

श्रेणी- स्नातक-साम्मानिक-तृतीयवर्षः

श्रेणीक्रमाङ्कः - २०१२०५

विश्वविद्यालयक्रमाङ्कः १२२२०२१६०००५२



ESTD-1985

KALINAGARMAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS. PIN: 743442. PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. NAMITA MANDAL

Roll No 201205 Registration/Student ID No ✓

1222021600052 Session 2022-2023

Of Sanskrit (DSE-6) (Hons/Gen) has completed his/her ✓

Project entitled काव्यालंकारसूत्रवृत्तिमूलविषयवस्तुः

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester 6th

..... Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date 23.05.2023

Rahul Dev Biswas

Signature of Supervisor
Department of Sanskrit

Head
Department of Sanskrit
Kalinagar Mahavidyalaya

पश्चिमवङ्ग राष्ट्रीय-विश्वविद्यालयधिनस्य
कालिनगरमहाविद्यालयस्य
संस्कृतविभागे

प्रकल्पनाम् -

काव्यालंकारसद्भावति
मूलविषयवस्तुः

पूर्णमानम् -

प्राप्तमानम् -

शिक्षकस्य स्वाक्षरम् ... 

२०२३ - तमे शिक्षावर्षे षष्ठाध्यापिकसत्रम्
पाठक्रमे प्रकल्पकायम्

अध्येतृनामः - नमिता मण्डलः

श्रेणीक्रमाङ्कः - २०३२०५

विश्वविद्यालयक्रमाङ्कः - ३२२२०२३६०००५२

श्रेणी - स्नातक - सामानिक - तृतीयवर्षः


प्रकल्पसहायकशिक्षकस्य स्वाक्षरम्

नमिता मण्डलः
अध्येतुः स्वाक्षरम्

कार्तज्ञप्रकटनम्

कालिनगरमहाविद्यालये संस्कृत विभागे
2023 तमे शिक्षावर्षे षष्ठसत्रार्धे DSE 6
पाठ्यक्रमे "काव्यलंकारसूत्रवृत्ति मूल-
विषयवस्तुः" इति प्रकल्पकार्यं भया
निमित्तम्।

एतस्य प्रकल्पस्य विनिर्माणकार्ये
तैभ्यः - संग्रहादि भाषाशुद्धिविधानं चेति
विविधेषु प्रसंगेषु विभागीय अध्यापकस्य
श्री राहुल-देव-विश्वास, श्री ननीगोपाल-
माइति ; महोदयस्य प्रभूतसहायतया
धन्याः अहम्।

तैभ्यः महोदयेभ्यः
हार्दकार्तज्ञप्रकटयामि।





वामनः

"मनोरथः शंखदत्तश्चतकः सन्धिमांस्तथा।
वभूवः कवयस्तस्य वामनाद्याश्च मन्त्रिणः।

राजशीखरः वामनस्य उल्लेखं कृतवान्।
आनन्दवर्धनः वामनस्य शैतिसिद्धान्तम् उल्लिखति
रम्भः वामनः भवभूतेः श्लोकम् उद्धृतवान्।
अतः वामनः ३०० इत्युक्तीयादौत्, पूर्व ७५० इत्युक्ती
यादौत् पश्चात् आसीदिति स्वीक्रियते।

वामनेन काव्यलङ्कारसूत्रमिति नाम्ना
प्रसिद्धो ग्रन्थः प्रणीतः अस्मिन् ग्रन्थे सूत्रं
स्ववृत्तिः उदाहरणं चेति त्रयोदशाः सन्ति।
प्रथमे शारीराधिकरणे काव्यप्रयोजनस्य त्रिविध-
शैतिनां च वर्णनमस्ति। द्वितीये दोषदर्शनाधि-
करणे पदवाक्यार्थदोषाणां प्रतिपादनमस्ति।
तृतीये गुणानां चतुर्थे च अलङ्काराणां प्रति-
पादनमस्ति। पञ्चमे अधिकरणे शब्दशुद्धिप्र-
भृतिविषयाः वर्णिताः।

वैशिष्ट्यम्:- शैतिसम्प्रदायस्य प्रतिष्ठापक

वामनः। काव्यलङ्कारसूत्रे सर्वेषां काव्याङ्गानां
विवेचनं वर्तते। वामनस्य ग्रन्थस्य काव्यलङ्कार-
सूत्रस्य परिशीलनेन ज्ञायते यत् स काव्यशा-
स्त्रस्य दण्डनीतेः व्याकरणदर्शनादीनां
शास्त्राणां च निष्ठातपण्डितः आसीत्। तस्य
स्वभावे अभिज्ञात्वं गम्भीर्यं विनम्रता च प्रमुखा
गुणाः।



वामनस्य ग्रन्थे

प्रमुखा सिद्धान्ताः मध्ये निर्दिष्टाः सन्ति —

१) काव्यलक्षणसिद्धान्तः —

यद्यपि वामन काव्यलक्षण विषयकः निर्देशः कृतः । वामनमतेन काव्यम् अलंकारात् ग्राह्यं भवति । सौन्दर्यमलङ्कारः । स सौन्दर्यस्वरूपः अलंकारः दोषहानात् गुणादानाच्च सम्पाद्यः । एवं वामनस्य मतेन गुणालङ्कारयुक्तौ दोषरहितौ शब्दार्थौ काव्यम् ।

२) काव्यात्मासिद्धान्तः —

वामनमतेन रीतिः काव्यात्मा । विशिष्टा पदरचना रीतिः । विशिष्टी गुणात्मा । एवं गुणयुक्ता पदरचना काव्यात्मा भवति । रीतिषु रेखश्चित्रं चित्रं काव्यं प्रतिष्ठितं भवति । विश्वनाथेन वामनस्य रीतिरात्मावादः खण्डितः ।

वामनः काव्यशास्त्रे देहात्मवादस्य प्रवर्तकः । स आत्मनः अस्तित्वं स्वीकरोति परन्तु मन्ये तन्ममेन आत्मा पञ्चश्रुतजन्तुः ।

काव्यप्रयोजनः —

तत्र प्रीतिः दृष्टं प्रयोजनम् । कीर्तिश्च अदृष्टं प्रयोजनम् । स्वमतपीषणा य तेनोक्तम् — “प्रतिष्ठां काव्यवन्द्यस्य यदासः सृणिं विदुः ।



अकीर्तिवर्तिनीं

त्वेव कुकवित्वविउम्बनाम् ॥

कीर्ति स्वर्गफलमाहुः शंसंसारं विपश्चितः ।

अकीर्ति स्वर्गफलमाहुः शंसंसारं दूतिकाम् ॥

तस्माद् कीर्तिमुपादातुमकीर्तिं च निवर्तितुम् ॥

काव्यालङ्कारसूत्रार्थः प्रसाद्यः कविपुङ्गवैः ॥

गुणालङ्कारभेदसिद्धान्तः —

गुणालङ्कारभेदसिद्धान्तः समनस्य महत्त

पूर्णम् अवदानमस्ति । तस्य मते काव्यशोभायाः

कर्तारो धर्माः गुणाः । तदतिशयदेतवत्त्वलङ्कारा

गुणः निन्याः अलङ्कारश्च अनित्या ।

दोषसिद्धान्तः — (१) पददोषाः २) पदार्थदोषाः

३) वाक्यदोषाः (४) व्यार्थदोषाश्च ।

रीतेः भेदकतत्त्वानि

आचार्यैः रीतेः विभिन्नानि भेदकतत्त्वानि । तद्यथा —

देशः — विदर्भदेशे प्रचलित्वा रीतिः; वेदर्भी
कथ्यते । पाञ्चालदेशस्य रीतिः; पाञ्चाली गोष्ठे
देशस्य च गौडी । मतमिदं न सर्वसम्मतम्



गुणः—

दण्डिभतेन गुणः शैतिनां भेदकत्वम्।
१० श्लेषः प्रसाद समता भाधुर्य सुकुमारता
अर्थव्यक्तिरुदात्तमीजः, कान्तिसमाधयः।
इति वैदुर्भिमार्गस्थ प्राणा दशगुणः स्मृताः।
एषां विपर्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्त्मनि॥

समासः— तन्मतेन समास शैते भेदकत
त्वम्। तेन समासाश्रिताः शैतिभेदाः प्राक्
पादिताः। आनन्दवर्धन रुद्रस्य प्रभाव
अनुभूयते।

११ असमासा समासेन मध्यमेन च भूषिताः।
तथा दीर्घसमासेति त्रिधा संयत मोदिताः॥

कविस्वभावः—

दण्डिना शैतिभेद निरूपणे कविस्व
भावस्य भूमिका गौणरूपेण स्वीकृता
आसीत् तद्याथा—

५ इति मार्गद्वयं भिन्नं लक्ष्यरूपनिरूपणात्।
तदभेदास्तु न शक्यते वक्तुं प्रतिकविस्थिताः।

वर्णगुम्फः—

समग्रतया वर्णाः समासा गुणश्च



रीते; ओदनिधिरि-

तत्त्वानि। आचार्योः स्वस्वमतानुसारं तत्त्वविशेषस्य
प्रधान्यं स्वीकृतम्।

रीति काव्यात्मत्वं महत्त्वं च

काव्ये चमत्कारं रम्यतां ललित्यं
चासादयितुं रीतिरनिवार्या। तदभावे कविता
वेनिता लावण्यं विहाय भलिनायते। सर्वेषु
तत्त्वेषु सत्स्वपि यावत् रीतिविशजते तावत्
खलु कविताकामिनी शोभते। अत एवाह
नीलकण्ठदीक्षितः —

“सत्यर्थे सत्सु शब्देषु सति चाक्षरखम्बरे।
शोभते यं बिना नीक्लिः स पश्चादिति
युष्यते॥

वामनस्य मतेन तु रीतिरेव

काव्यस्थात्मा। परवर्तिभिः आचार्यः रीतेः
काव्यात्मत्वं न स्वीकृतम्। तथापि रीतिसिद्धा-
न्तस्य महत्त्वं स्वीकृतमेव। वामनो रीति-
सिद्धान्तं गुणानामाधारेण स्थापितवान्।
गुणः रसधर्माः। ते काव्ये सन्तं रस नियत-
रसधर्माः।
पेण



तथ्यसूत्रः

- 1 श्रीमद्. वामनाचार्य - विरचित काव्या-
लंकारसूत्रवृत्तिः, अशोककुमार - वन्दोपाध्यायः
सद्वेश, कोलकाता - 06, 2021
- 2 अलंकारशास्त्रेतिहासः रामकुमार - दाधीचः
दंसा - प्रकाशन, जयपुरः, 2019
- 3 संस्कृतकाव्यशास्त्रेतिहासः जगदीशचन्द्रमित्रः
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2015
- 4 काव्यलंकारः डॉ. रामानन्द शर्मा, चौखम्बा
संस्कृत सीरीज अफिश, वाराणसी
- 5 काव्यलंकारसूत्रवृत्ति वि. एन. पावलिकेशन
- सुमिता वसु
- 6 काव्यलङ्कारसूत्राणि, डा. एल. एस. वादिय-
चार्यः, विद्याधीशस्नातकोत्तर संस्कृतशोधकेंद्रः
- 7 काव्यलङ्कारसूत्रवृत्तिः, श्री पं. केदारनाथ शर्मा,
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी



পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়



কালিনগর মহাবিদ্যালয়

বিষয়- রাষ্ট্রবিজ্ঞান

প্রকল্পের বিষয় - পনপ্রথা ও যৌনহেনস্থা

নাম - পায়েল দাস

ক্রমিক সংখ্যা - ২১২০০৭৫

রেজিস্ট্রেশন নং- ১২২২১২১১০০৪৯৩

সেমিষ্টার- তৃতীয়

সাল- ২০২২-২০২৩

P-H 8918550844



ESTD-1985

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS. PIN: 743442. PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Payel Das

Roll No 2120075 Registration/Student ID No

1222121100493 Session 2022-2023

Of (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Laws relating to Dowry and

..... Sexual Harassment

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester ...III...

..... Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date 24-12-2023

T.K. Das

Signature of Supervisor
Department of Political Science

Head
Department of Political Science
Kalinagar Mahavidyalaya

ମୁଦ୍ରା

	ପ୍ରକାର	ପୃଷ୍ଠାଂକ
1.	ପଦାବଳୀ	1-3
2.	ସୌବିଧେୟତା	4-7
3.	କୃତଜ୍ଞତା ଶ୍ଳୋକ	8

ଏକପ୍ରଥା

ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଡିଜିଟାଲ ଡାଟା ଏକାଡେମି ଅଭ୍ୟାସ ସେକ୍ଟର
 ଏକାଡେମି ଚଳେଇ ତେଣୁ କିଛି ସମୟ ଓ ଶକ୍ତି କିଛି ନାହିଁ।
 କିନ୍ତୁ ସାମାଜିକତା ଏକ ଶକ୍ତି ଏବଂ ସାମାଜିକତା କିଛି ନାହିଁ।
 ସାମାଜିକତା, ଅର୍ଥାତ୍ ସାମାଜିକତା, ଅର୍ଥାତ୍ ସାମାଜିକତା । କିଛି ନାହିଁ
 ହେଉ ଆମ ସାମାଜିକତା ସାମାଜିକତା ନାହିଁ ହେଉ ଆମ
 ସାମାଜିକତା ହେଉ ଆମ ସାମାଜିକତା ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା । ଆମ ଆମ
 ଆମାଜିକତା ଆମାଜିକତା ଆମାଜିକତା ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ତାହା
 କିଛି ନାହିଁ । ତାହା ଆମ ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ । 2025 ଡାଟା ଏକାଡେମି
 ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ।

ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା

ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା
 ଏକପ୍ରଥା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା ଏକପ୍ରଥା ହେଉ ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏକପ୍ରଥା

[illegible]

ପୁରାତନ କାଳେ ହିନ୍ଦୁ ଅନ୍ଧାଜ୍ଞତା ବାଧିବା ଶୁଦ୍ଧତା
 ଯାହା ଏହି ଡାକ୍ତରୀ ସଂସ୍କୃତି ଡାକ୍ତରୀକାଣୀ ହୋଇଛି ।
 ଜାଣି ଅନ୍ଧାଜ୍ଞତା ଥିବାରୁ ହିନ୍ଦୁ ଅନ୍ଧାଜ୍ଞତା ବାଧିତ
 ବିଦ୍ୟା ଅନ୍ଧାଜ୍ଞତା ଯୋଗୁଁ ଡାକ୍ତରୀ ପ୍ରଚଳନ ହିନ୍ଦୁ ।
 ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଏହି ଡାକ୍ତରୀ ଅନ୍ଧାଜ୍ଞତା
 ଡାକ୍ତରୀ ହିନ୍ଦୁ । ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ
 ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ ଡାକ୍ତରୀ

ଆଜି କିନ୍ତୁ ହେଲେ ହେଉଛି ନିର୍ବିକଳରେ ଅନ୍ଧାରରେ ଯେଉଁ
 ଅବାଧ ଅନ୍ଧାର ସି ଅଧିକାର । ସମସ୍ତ ଆନ୍ଧାର ସାତେ ଏକଟି ହୋଇଥିବେ
 ଆମର ସମ୍ମାନ କର, ହାଲୁକେଇ ସତ ହାଲୁକେଇ କରାନ୍ତେ ଯାଆ, ହାଲୁକେ
 ଚୋରା ଘରୁଆ ଓ କଷ୍ଟ ଓହ୍ଲେ ହେଲେ ଥିବେ ହେଉଛି ଲୋକେ
 ବେଲି-ଲାଜେ । ଆଜି ହେଉଛି ବାବା ହେଉଛି ଡାହାଣେ ହେଉଛି
 ଜିନିଷର ଧର, ଚୋରା ଘରୁଆ, ଅନ୍ଧାର ଭରିବେ ବିଷେ ମିଳି
 ତାଳ ଆଉ ଧାତୁରା ଖସିଯାଏ ଯାଏ ହୋଇ ଆଗେ ତାଳ-ଧାତୁରା ।
 କିନ୍ତୁ ଚୋରା ଘରୁଆ ନିହାରି ଅବ ଅନ୍ଧାରରୁ ହେବା ପାଇଁ,
 ଓହ୍ଲେ ଧର-ପ୍ରଥା ବଳ କରନ୍ତେ ରଲେ ହେଉଛି ତାହା ହେଉଛି ତାହା
 କି ଅନ୍ଧାରରେ ଏହିଭଳି ଆଗେ-ହେଉ ଆମ ତରଫରୁ ଆଗେ-ହେଉ
 ହାଲୁକେଇ କଷ୍ଟିର କାନ୍ଦିବେ ନିର୍ବିକଳ ଧାତୁ ମିଳେ ନାହିଁ ନାହିଁ
 ୨୮ ।

(যৌন-তত্ত্ব)

একজনের দেহে অন্যজনের সন্নিবেশিত হওয়া অতিস্বাভাবিক যৌন-আচরণের যৌন-তত্ত্ব বা উল্লেখ্যতা বলা হয়। যখন প্রত্যক্ষভাবে দু'জনের অঙ্গের মধ্যে অথবা পরোক্ষভাবে (যেমন- জোর কড়া হয় তখন- তারে যৌন লাভ করা বলা হয়) অপরদিকের যৌন-নির্ঘাতন (যদি শরীরে হয়) বা উল্লেখ্যতা বলা হয়।

যদি কোন প্রাণীর মধ্যে লোক বা তরুণ কোন ক্ষেত্রে যৌন-কর্ম লিঙ্গ হওয়ায় জন্য অনুপ্রবেশ করে তখন যৌন-নির্ঘাতন বা বিশেষ আয়ের আওতাধীন বর্ণনা বলা হয়।

❖ নির্ঘাতন :-

দু'জনের বা দু'টি - মাঝে মধ্যে যৌন-নির্ঘাতন-প্রতিরোধিতা অতিরিক্তভাবে বলা হয়। যখন- জোর-পূর্বক আবেগজনক স্বাভাবিক (দু'জনের মধ্যে) যৌন-কর্ম লিঙ্গ করা হয় বা লাভ করা হয় তখন- আরো উচ্চতর তরঙ্গ বর্ণনা বলা হয়।

ଲକ୍ଷ୍ମୀ ବିହାରୀଙ୍କ ଜନ୍ମ ସ୍ଥାନ ସ୍ଥାନୀୟ ଶ୍ରୀମତୀ
ପ୍ରଭାତ ପାଠ୍ୟ ।

କିଛି ୨୫-୩୦% ସାହିଲା ଏବଂ ୫% ପୁରୁଷ ଭାବେ ଚିହ୍ନିତ ହୋଇ
 ଯୌନ-ବିରାଡିତ ହେଉଥିବା କଥା ପ୍ରକାଶ୍ୟ ହେଉଛି । ସାହେଲେ
 ଯେଉଁଠି ସାହେଲେ ବିରାଡିତ ହେଉଥିବା ସାହେଲେ ଯୌନ-ବିରାଡିତ
 କଥା ପ୍ରକାଶ୍ୟ ନା ଆମର ପ୍ରକୃତ ସାହେଲେ ଯେଉଁଠି କାହାଣୀ
 ଯେଉଁଠି ଯେଉଁଠି ଲିଙ୍ଗ-ସେବାରେ ସମ୍ବଳିତ ନାହିଁ । ଅଧିକାଂଶ
 କିଛି ଯୌନ ବିରାଡିତକାରୀ ବିରାଡିତର ପୁରୁଷାଂଶିତି : ୭୦%
 ବିରାଡିତକାରୀ ପୁରୁଷ ଯିଏ ଆହୁରି ହେଉଛି ଏକାକୀ
 ଶିଳ୍ପ, କାଳ, ସାହା, ଅଥବା କାଳିନୀତ ହେଉଛି ; ଅନ୍ୟତମ
 ଅନ୍ୟତମ ୬୦% ଅଧିକିତର ସାହିତ୍ୟିକ ସାହିତ୍ୟିକ ବନ୍ଧୁ, ଯେଉଁଠି
 ଅଥବା ଅଧିକିତ ହେଉଛି : ଏହା ସାହ ୨୦% ବିରାଡିତକାରୀ
 ଅଧିକିତ ହେଉଛି ; ସାହିଲାରେ ଦ୍ଵାରା ଅଧିକିତ
 ବିରାଡିତ ୨୫% ସାହିଲାରେ ଅଧିକିତ ୧୦୦% ସାହିଲାରେ ଅଧିକିତ
 ହେଉଛି ପ୍ରକାଶ୍ୟ ହେଉଛି । ସାହିଲାରେ ନା ଅଧିକିତ କିଛି
 ଅଧିକାଂଶ କିଛି ଯୌନ-ବିରାଡିତ ପୁରୁଷ ଦ୍ଵାରା ହେଉଛି
 ସାହିଲା ନା ଅଧିକିତ ଯୌନ ବିରାଡିତକାରୀ କିଛିରେ ଅଧିକିତ
 ଯୌନତା ଆହୁରି ହେଉଛି । ଏହା ବର୍ତ୍ତମାନ ୨୨-୨୫ ବର୍ଷର
 ସାହିଲା । କିଛିରେ ସାହିତ୍ୟିକ ସାହିତ୍ୟିକ ଆହୁରି ହେଉଛି
 ଏହିକାଳ-କିଛିରେ କିଛି ସାହିତ୍ୟିକ ଯୌନତା କିଛି
 ଆହୁରି ହେଉଛି । ଏହା ସାହିଲା କିଛିରେ ହେଉଛି ।

୩

* ବିକାଶ ଟାହିନାସକ୍ଷମ ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଓ - ବିକାଶ

ଟାହିନାସକ୍ଷମ ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଯୌନ-ବିକାଶ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରାଯିବା ହେଉ
ଥାଏ । ଉପସ୍ଥଳୀ ଅନୁସାରେ, ଟାହିନାସକ୍ଷମ ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ପରିଚାଳନା
ଓଡ଼ିଆ ଯୌନ-ବାସ୍ତବିକତା ଓ ବିକାଶ ହେଉ ପାଏ
ବଡ଼ ବୁଝିପାରେ ଥାଏ । (Sobsey & Varshney, 1989)

কৃতজ্ঞতা স্বীকার

আমি আয়েল দাস কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়ের

B.A General 3rd Semester এর ছাত্রী ।

আমাদের বাস্তবিক জীবন যাত্রায় শিক্ষক মহোদয়

প্রদত্ত দায়িত্ব প্রকল্পটি পূরণের ক্ষেত্রে যথা

সমস্ত আশ্রয় গ্রহণ করব। অধিক প্রয়োজন ও নির্দেশিত
অনুষ্ঠানিকতা ও উৎসাহ দানের জন্য আন্তরিক কৃতজ্ঞতা
ও ধন্যবাদ প্রদান করা হলো।

Payel Das
শিক্ষার্থী স্বাক্ষর

15
20

তারিখ : 02/12/2022
অঙ্ক

T. H. Das
24/12/22

WEST BENGAL STATE UNIVERSITY



लक्ष्यं विश्वमानम्

শীর্ষ্যং বিশ্বমানম্

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA



SUBJECT - POLITICAL SCIENCE PROJECT

TOPIC- public opinion

SEMESTER - 4th

YEAR - 2023

COURSE CODE- PLSSECO2M

REG. NO- 1222121100442

COLLEGE ROLL NO.- 2120068

NAME - SAYANI NAYEK

স্বতন্ত্রতা স্বীকার

আমি আশীষী নামের কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়
B.A General, 4th semester এর ছাত্রী। আমাদের
বিশ্ববিদ্যালয় বিজ্ঞান শিক্ষক ব্রহ্মাণ্য ওবুল কামার
দাউ ও (সকলটি কামাণ্যের

ক্রেডে যথা অঙ্কুর আশ্রয় করেন। অধিক
উপদেশ ও নির্দেশনা অস্বাভাবিক ডেডলাইন
দানির জন্য স্বতন্ত্রতা দেন।

Sayani Nayek

শিক্ষার্থী প্রাক্ষর

তারিখ-6.6.23

12
20



ESTD-1985

KALINAGARMAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS, PIN: 743442, PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Sayani Nayek

Roll No. 2120068 Registration/Student ID No.

..... 1222121100442 Session 2022-23

Of (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Public Opinion

..... under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester IV

..... Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

T.K. Das

Date 24-05-2023

Signature of Supervisor
Department of Political Science

Head
Department of Political Science
Kalinagar Mahavidyalaya

পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়



কালিনগর মহাবিদ্যালয়

বিষয়- বাংলা (SEC 1)

কলা বিভাগ

প্রকল্পের বিষয় - লেখিত - আঙ্গিক ও শিল্পকলা

নাম - সোমা দাস

ক্রমিক সংখ্যা - ২১২০১৪৬

রেজিস্ট্রেশন নং- ১২২২১২১১০০২৩৯

সেমিষ্টার- তৃতীয়

সাল- ২০২৩

তারিখ- ১০/০১/২০২৩



KALINAGAR MAHAVIDYALAYA
Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University
P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS, PIN: 743442, PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Sama Das

Roll No 2120146 Registration/Student ID No

..... 1222121100239 Session 2022-23

Of Bengali (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Chalachitra - Angik-O-Shulpakala

.....
under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester ... 3rd ..

..... Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the
examiner for their consideration.

Date 08/08/2023

Pradip Sardar
Signature of Supervisor
Department of Bengali

Head
Department of Bengali
Kalinagar Mahavidyalaya

প্রস্তাবনা

ভিলেজা গ্রামের দর্জা করা মাছ এবং ভিলেজা হালগুণোত বন্ধ হয়ে যাচ্ছে।
 আজ লেটিস প্রদর্শনের জন্য প্রেক্ষাগৃহের ভিলেজা বাঁচাও বা রক্ষা করতে
 হলে আমাদের অবশ্যই কর্মকাণ্ড শুরু পূর্ণ কাজ করতে হবে, তাই প্রেক্ষা
 গৃহ ভিলেজা আরো কর্মকাণ্ড অগত্যা তার বিজ্ঞানভিত্তিক খান নিজে লেটিস প্রদর্শন
 হলে দর্জাও ধীরে ধীরে পারবে, লেটিস প্রদর্শন করে প্রথমে এটা করতে হবে-
 লেটিস ভিলেজা প্রতিষ্ঠার অর্থাৎ প্রেক্ষাগৃহ ভিলেজা উপদান, অনলাইন
 হচ্ছে ডিজিটাল বা ইলেক্ট্রনিক প্রযুক্তির এক বাড়তি ব্যবহার ব্যবস্থা
 এটা প্রেক্ষাগৃহের উপাদানকে চাড়ে মতে পারে, কিন্তু প্রকৃত লেটিস ভিলেজা
 যে প্রেক্ষাগৃহের উপাদান বা কনটেন্ট, এটার আগে আমাদের এটা খান প্রাণ
 বিজ্ঞান করতে হবে, তাই প্রতিস্থাপনী লেটিস ভিলেজার গুন এবং এর ভিলেজা
 খান ও গুরুত্ব আজাদী প্রদর্শনের প্রধান বিনোদন বা ভিলেজার ব্যবস্থা হয়ে বৈধ
 থাকবে, দেখে মানুষ লেটিসকে আসন রাজ্যগতের প্রতিরূপ খুঁজে পেলো,
 অতঃপর দু-টি থেকে দুই-টি আমাদের লেটিস ভিলেজার এক অল্প পূর্ব
 বিজ্ঞানকে একত্রে নিয়ে গেলো।

তাই লেটিস একক বিকল্প পর ডিজিটাল ও ইলেক্ট্রনিক-এর
 প্রযুক্তির আধুনিকায়ন আজ যে অবস্থানে দাঁড়িয়ে আছে, তাই লেটিস
 ভেল বা দেখতে দর্জাকে তার প্রেক্ষাগৃহে মারার প্রয়োজন পড়ে না, কেননা
 দর্জাও মত, মত দর্জার মধ্যে বসে কিংবা তাদের তেল ভিলেজা হলে জিমে
 একটি নির্দিষ্ট সময়ের জন্য নিজেকে বন্দি রেখে লেটিস আর দেখে না বলে
 আমাদের লেটিস প্রতিষ্ঠার অধিকাংশের ধারণা, আজ কাল দর্জা বাসায় বা
 নিজের বন্ধুত্বের ইচ্ছা করলে একা বসে বোকাহীন মনে বা কম্পিউটার
 স্ক্রিনে বা টিভিতে অথবা প্রজেক্টরে ছবি-ছবিতে লেটিস উপভোগ করতে
 পারছেন, মনে যে ধারণার জন্ম হচ্ছে, অতীত মনুষ্য ভিলেজা হল কর্মচার বিজ্ঞান
 হবে।

একইসাথে লেচ্চিগ এখন টিভি বা অনলাইনের মাধ্যমে বিভিন্ন পোর্টাল বা
সাইটে, ও নাটক বা ভিডিও - পাট নাটক বা গুজা - ভিডিও নাটক বা
টেলিফিল্ম বা ওয়েব ভিডিওর মাধ্যমে দর্শকের হাতের পুঁজিতে লেগে আছে,

উপরিউক্ত মাধ্যমের কোন দর্শকে লেচ্চিগ মিলেপার গুণি, বিভিন্ন জন্য
এটি একটি অপার বিজ্ঞানসম্মত বিষয়, মানুষ এখন চার্লস হাজার হাজার
বছর পূর্বের নানান পণ্য জেরি রঙে আঁকা পাহাড়ের গুহাচিত্র এবং পাথর, কাঁচ
বা গাছের বাকলে, কাদামাটিতে, গেমডাম, কাপড় আঁকার আঙুলে পরিষ্কৃত,
এরপর আঙুলে মোটা কলমে, পাখাচাকি যেসবদক মাধ্যমের মাধ্যমে দর্শকে বিজ্ঞান
কল্যাণে আবিষ্কার হয় ক্যামেরা, কাপড় আঁকা কালো বাস্তব চিত্রচিত্রে দেখে গাছ
এখন বিস্মিত,

এরকি মাও বছরের অধিককাল পর চিত্রচিত্রে এখন বিভিন্ন মন্ত্র ও রাসায়নিক
প্রক্রিয়ায় লেমান রূপে লেচ্চিগ মিলেপ হিমেব আবিষ্কৃত হলো এখন বিজ্ঞানসম্মত
সীমা রইলো না, এরপর বিভিন্ন লেমান নিত্যদিনের মাধ্যমে বনো অমরা
চিত্রনাট্যের পরিকল্পনার আলোকে লেমান চিত্রে ধারণ করে লেচ্চিগ
মিলেপ রূপায়ণের মাধ্যমে দিলে প্রেক্ষাগৃহে প্রদর্শন করা শুরু হলো

এখন পদ্য লেমান দৈন চুটে আমার দৃশ্য (ক্যামেরার
লেমান আঙুলে ধারণকৃত দৃশ্য) দেখে দর্শক ভেবে হল ওকে চুটে বের
হয়ে এগিয়েলেন, এটাই দিলে বিজ্ঞান লেচ্চিগ প্রদর্শনের প্রথম এক বিজ্ঞান
কর ও আঙুলে হওয়ার মাধ্যমে বনো,

কৃতজ্ঞতাস্বীকার



আমি এর প্রথম কৃতজ্ঞতা জানছি আমাদের কলিকতার মহাবিদ্যালয় কলেজ
জরপাশ্চ অধ্যাপক এবং বিষয় শিক্ষক অধ্যাপক রজনীন্দ্রনাথ কলিতার মহামোহিত এই
ব্যবহারিক প্রকল্পটি সম্বল করা আমার পক্ষে এক্ষেত্রে হত না। তাদের আমি কৃতজ্ঞতা
জানছি আমাদের অন্যান্য শিক্ষক শ্রমীদের মারা প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ ভাবে এই
প্রকল্পটি রূপায়নের ক্ষেত্রে আমাকে সাহায্য করেছেন। সেই সঙ্গে ধন্যবাদ
জানছি এছাড়াও শিক্ষকশ্রমীদের মারা প্রকল্পটি রূপায়নের ক্ষেত্রে কোননা
কোন ভাবে সহযোগিতা করেছেন।

পরিশেষে আমি হৃদিক আন্তরিকতা জানাই কলিকতার মহাবিদ্যালয়
প্রতিষ্ঠাতা, পরিচালক ও প্রকাসক বৃন্দকে মারা শিক্ষার্থীদের পাঠদান,
প্রকল্প রূপায়ন এবং মানবিক টেক্সট এবিন করে মানুষ জগতের করিগর
ভৈরব মহাকাজে এদা নিম্নজিত।

ସୂଚିକା

- ବିଷୟ
- ① ପ୍ରସ୍ତାବନା
 - ② ବୃତ୍ତାନ୍ତର ସୂଚକ
 - ③ ସୂଚିକା
 - ④ ପ୍ରସ୍ତାବନା
 - ⑤ କଳ୍ପ ଓ କଳ୍ପବଳୀ
 - ⑥ ଦୋଷବୃତ୍ତ ଗାଥା

ପୃଷ୍ଠା ନଂ

1-2
3
4
5
6-11
12

দ্বৈততা

মানব আচরণের এক বিস্ময়কর আবিষ্কার লেটিন, ও আধুনিক কালের অন্যান্য জেরা জিন্মাধর্মিতা ও জনগণিতা, আলোচনার দ্বারা, ধর্মনিষ্ঠা বিনীত কারুকার্য জীবনের গর্ব-গর্বনার লেখান অস্তিত্ব প্রকাশের এই ধর্মি মটি প্রেক্ষাপটের কল্যাণি পদা থেকে শুরু করে টিভি ও কম্পিউটারের কল্যাণি পদায় প্রচলিত মানুষের একেই আকর্ষণীয় ধর্মিতা, মানুষের গতি মনে প্রবণ একই জীবনে এ ধর্মিতার প্রভাব বিস্তারের ক্ষমতা অস্বাভাবিক এবং বর্তমানে ও একই জীবনে শিক্ষা ও অহঙ্কৃতির অন্যতম জেরা ধর্মিতা ও বাহ্যিক হিসেবে অস্বাভাবিক, পৃথিবী পৃথিবীর সব দেশের এক মানুষের কাছে এর জনপ্রিয়তা ক্রমেই বাড়ছে এবং এটি জনসংযোগের ক্ষমতামূলী ধর্মিতা হিসেবে ইতিমধ্যেই স্বীকৃতি অর্জন করেছে, এবং শুধুমাত্র মানুষের জীবনে প্রভাব বিস্তারের ক্ষেত্রে এর অস্বাভাবিক ক্ষমতার মতো আধুনিক কাল অস্বাভাবিক জীবনে লেটিন পালন করছে ব্যাপক ও গুরুত্বপূর্ণ প্রভাবী প্রভাবিতা, একই - একই জীবনে ও মানুষের জীবন বহির্গত তালার ক্ষেত্রে লেটিনের প্রভাবিতা প্রভাবিতা একই জীবনে বোজার তালার ক্ষমতা:

"The Cinema is only one element which brings some measure of influence to bear on our attitude to life".

জিল্প ও জিল্পকলা :-

কল্প - বাস্তবতায় স্বাভাবিকতায় যে কোনো নান্দনিক সৃজনশীল কর্ম হলো - জিল্প বা জিল্পকর্ম, এই অংশটোকে যদি জিল্পের আবিষ্কৃত অংশটো হিসেবেও বিবেচনা করলে দেখা যায় ঠিকি ধূল সৌন্দর্য কাজ করে থাকে, এমন -

৩) কল্প - বাস্তবতা : মানুষ তার চারপাশের জগতকে অনুভব করে, বাস্তবতার নিরিখে, যেখানে জিল্পের স্থান নেই, জিল্পের জগৎ বাস্তব জগতের বাইরে গড়ে অনুভব করার বিষয়, এই বাইরে জগতটি হলো - কল্পজগৎ, কোনো বাস্তবতাকে মগ্ন কল্পজগতের সাথে জিল্পে উপস্থাপিত হয়, যখন এ হয়ে যায় কল্প - বাস্তব জগতের বিষয়, ধরা থাকে কোনো জিল্পী একটি কোনো অবস্থার স্মৃতি তৈরি করে, তাহলে তার কাছে একটি বাস্তব স্মৃতির রূপ থাকবে, জিল্পী এই স্মৃতি তৈরি এমন তার কল্প তার কিছু অংশ মুক্ত করে দেবে, এর ফলে একটি কল্প - বাস্তব রূপ তৈরি হবে, আবার এমনও হতে পারে জিল্পী তার কল্পনা থেকে এমন একটি রূপ তৈরি করলে তার কোনো বাস্তব রূপ জগত পাতলা যায় না, এক্ষেত্রে জিল্পী তার কল্পনাকে বাস্তব রূপ দেবেন তার সৃষ্টির ক্ষমতা দিয়ে, ফলে জিল্পীর কল্পনাকে হয়ে থাকে বাস্তবতার অংশ, যদি এই জিল্পকর্ম হয় কোনো অলৌকিক ক্ষেত্রের স্মৃতি, তাহলে তাকে জিল্পী প্রমত্ততার সূচন করবেন যে, তারসাম্যের অঙ্গের স্মৃতিটি টিকবাজি না যায়, এক্ষেত্রে জিল্পী স্মৃতির তারসাম্য নির্ধারণ করবেন বাস্তবতার নিরিখে,

আবার অন্য দিক থেকে কল্প - বাস্তব রূপ বিচার করা যেতে পারে, ধরা যাক মানুষের প্রাতিতিহাসিক কোনো অংশটোকে জিল্পের মাধ্যমে উপস্থাপন করেছেন, ধরা যাক ৩৫,০০০ খ্রিস্টপূর্বাব্দের কোনো অবলম্বনে নির্মিত তুই জিল্প কোনো একটি অংশ একটি বৈজ্ঞানিক ধাঁচে দেখা যাবে, দর্শক বাস্তবতার নিরিখে তুই দৃশ্য দেখে ব্যথিত হবেন, দর্শক কল্পনার দোহাই দিয়ে একটা গোল বলে পারবেন না।

২. **গুণেনকীল কৰ্ম :** কল্প - বাস্তবতাৰ নিৰ্বাহে গুণ, কাজটিত জিল্লীৰ গুণেন
কীলতা থাকেই হ'ব, যদি তা না হয়, তেওঁ তা হ'ব অনুকৰণ. এমানে, গুণেনকীল
বলতে ধৰা হয় যে, জিল্লীৰ নতুন গুণীৰ উদ্দেশ্য, এই জিহ্বা জিল্লী হিচাপে তিনি
গাথাৰে জিল্লীৰ গুণীমতা বা গুণকৰ, ধৰা মাক কোনো চিনাকী দ্যা টিভিৰ গুণ
মোনালিষা দিয়াটোকে নিখুঁতভাৱে আঁকলেন, নিখুঁত অঙ্কনৰ ওহ চিনাকীকো আঁক
বাহা দে, কিন্তু জিল্লীৰ আমল গ্ৰাহন দেবা না. কাৰণ, এতে তাঁৰ কোনো গুণেন
কীল ক্ষমতাৰ প্ৰকাশ ঘটাব না, মানে ওহ চিনাকীৰ গুণী দিম জিল্লীৰ গুণীমতা
বা গুণকৰ প্ৰকাশিত হ'ব না.

৩. **মঙ্কলময় কৰ্ম :** যদি কোনো গুণীৰ জিহ্বা জিল্লী মঙ্কলময় অনুভবে
জিল্লীভাৱীৰ কাজে পৌঁছাত না পাবেন, তেওঁ তা মথায় জিল্লী হয় টোৰে না.
এ জিল্লীকৰ্ম মানুহৰ গুণুমাৰ মনোহাটিকে ধ্বংস কৰে দেয় বা অমঙ্কলময় অনুভ
বাৰ্তা পাঠায়, তা কল্পবাস্তবতা এম গুণেনকীলতাৰ বিচাৰে মন্ত্ৰ নিখুঁত হ'ব. তা
জিল্লী - বৰ্ত্তা কল্প পৰিত্যাগে হ'ব, ধৰা মাক, কোনো চিন, গান, গল্প ইত্যাদি
যদি মানুহৰ গাভ্ৰুদায়িকতাৰ বিষয়াক্ষ নাটোমে দেয় এম এম প্ৰত্যহ গাভ্ৰুদায়িক
দাঙাৰ গুণী কৰে, তেওঁ তা জিল্লী - বৰ্ত্তেৰ জলিকায় গ্ৰাহন পায়.

৪. **নান্দনিক কৰ্ম :** জিল্লীৰ গুণেনকীল গুণীকৰ্ম হ'ব অনন্দপ্ৰদায়ী, যা গুণ
প্ৰদে প্ৰবন্ধমান ধাৰায় হ'ব জৌন্দৰ্ম মন্ত্ৰ বা নান্দনিক.

ইন্দ্ৰিয়গ্ৰাহ্য এ একলে উপাদান মানুহৰ মন বা আত্মি. নান্দক প্ৰত্যহ গুণ
কৰে আৰু ওহ উপাদানৰ জৌন্দৰ্ম বলা মায়. এই জৌন্দৰ্ম এমানে প্ৰতিভা সিদ্ধ
মনুষ্ট্ৰময় উপাদান, এই জিহ্বা মানুহৰ জৌন্দৰ্মময় গুণীকৰ জিল্লী বলা হয়.
একটি পাখাৰে যও জৌন্দৰ্মই থাকে, তা জিল্লী নয়. কিন্তু এম অনেক গাভ্ৰুদায়িক
অঁকা পাখাৰে দিয়াটোকে বলা হ'ব জিল্লী. ওহ জিল্লী মানুহৰ গুণেনকীল
কাজ. কোনো বিষয়ৰ বিচাৰে জিল্লী কৰ্ম অমন্ত্ৰ এতম বিৰাজ কৰে. একটি
গান বা একটি দৃশ্যকে যদি জিল্লীকৰ্ম হিচাপে বিবেচনা কৰি, তেহলে তা অমন্ত্ৰ হিচ
বই বিবেচনা কৰি, একটি হাত হাত মানুহৰ গুণীকৰ জিল্লীকৰ্ম মথল বলা হয়.
তেহলে হাত হাতৰ উপস্থিতি মনে বেহেই বলা হয়. হাত হাতৰ জন্য আকৃষ্ট
কিন্তু মনে হোকেই মায়. আবার একটি হাতকৈ যদি আনাদাতোৰ জিল্লীকৰ্ম হিচ
নিৰ্বাচন কৰা হয়, তেহলে মন্ত্ৰ জিল্লী ধোতে চান. ওহ জিল্লীকৰ্ম হ'ব.

এখানে শত অর্থের একত্রী হিচাইয়ে সৈক্যপিত্ত হয়।
 কিল্প বিমূর্ত, তাই তার জ্ঞান মনে, কিল্পের মূল্য 'আমি'র জীবনযাত্রার উপর
 নির্ভরশীল। মানুষের অন্যান্য বৈশিষ্ট্যের কাজের সাথে কিল্পকর্মের পার্থক্য গড়ে
 তোল তার জীবন। যেহেতু জীবনযাত্রার মানুষ মানুষে ভিন্ন, তাই কিল্পের রম্য
 ও মানুষ মানুষে ভিন্ন মাত্রা পায়। সেই কারণেই একই জ্ঞান কারো কাছে পুঁজি হলে
 লাভ, আরো সেই জ্ঞান অন্যের কাছে কুণ্ডলিত মনে হয়।
 মানুষের মন প্রাকৃতিক আদর্শের কাজের তিরে দিয়ে সুবিধা হয়ে যায়। কিল্পকর্ম
 সেই সুবিধা দমা দেয় মুক্তি দেয়। আর সেই মুক্তিই মানুষকে দেয় আনন্দ। কিল্প
 মানুষকে জোড়ার পায়ে একত্রীকৃত করে, কিন্তু কিল্পযাত্রার মানুষকে বিকৃতচারি
 থাকে সিক্ত রাখে।

কিল্পকলা একটি অমাব্যবহ মোজামোজ মায়িক, প্রাথমিকভাবে কিল্পী
 এবং তার কিল্পকর্ম পেলেজকারীর তিরে মোজামোজ গড়ে তোল। উল্লেখ্য পল
 শের সূত্রে পারজগতিক জীবনযাত্রার আদান - প্রদান গটে, মুখি তাই নয়, কিল্প
 কর্ম জ্ঞান ও কর্মকে অতিক্রম করে চিরমত মায়িক হয়েও বহু মানুষকে আনন্দিত
 করতে পারে।

আর্থিক বিচারে কিল্পকলাকে প্রধানত দুটিভাগে ভাগ করা হয়, এই ভাগ
 দুটি হলো - চারুকিল্প (Fine art) এবং কারুকিল্প (Crafts),

চারুকিল্প (Fine art)

চারুকলা মূলত মানুষের মনের সুবিধা দমা থেকে মুক্তির আনন্দ দেয় এবং মনকে
 মনকে বোঝান করে। এই কলা মানুষের প্রাকৃতিক জীবনযাত্রার ক্ষেত্রে বৈশিষ্ট্য
 সুবিধা দেয় না, কিন্তু জীবনকে আনন্দময় করে তোল। অঙ্কিতকলা, নৃত্যকলা,
 চিত্রকলা, নাট্যকলা ইত্যাদি। এর তিরে দিয়ে মানুষ জীবনের নানা
 রূপ নানাভাবে প্রকাশ করে। মনে জীবনকে নানা আনন্দ দেয়ার অমার
 ক্ষেত্র তিরে করে দেয়।

কারুশিল্প (Crafts)

মানুষে প্রাকৃতিক প্রয়োজনে যে সকল উপাদান ব্যবহৃত হয়, তার ভিতরে জীবনের অনুরণন ঘটানো হয় কারুশিল্পে, হাতের কাজে যে চাষের কাজ আছে, তার গুণের স্বাদে তৈরি করার ভিতরে রয়েছে কারুশিল্পের রসামতি, এই শিল্পের বিকাশ ঘটে লোকজো প্রভিষ্ট্যর সূত্রে, তাই কারুশিল্পের ভিতরে পাওয়া যায় জাতির সংস্কৃতির পরিচয়, কলশিল্প, মণ্ডশিল্প কাঠশিল্পের মতো কারুশিল্পের নমনো দেহ দেহা উল্লিখ্য। কারুশিল্পের বিকাশের সাথে স্থানীয় উপকরণের একটি বিশেষ দ্রষ্টব্য থাকে, দেয়া মায়া, কিন্তু ও কাঠের শিল্প গড়ে উঠে বহুতর কলকায়, নানা বা অনুরোধ পাড়ে, কিন্তু বহুশিল্পের বিকাশ ঘটে যেও অল্পদূর অস্তিত্বের সূত্রে, যোগাযোগ নথিভুক্ত হোলো হলে, অনেক সময় উপকরণের উৎস দূর হলেও কোনো বিশেষ অঙ্গনে কারুশিল্পের বিকাশ ঘটে পারে।

শিল্পকলা :-

দৃশ্য বা অদৃশ্য কোনো ভাবরূপ শিল্পীর চিত্তের নবরূপ প্রায়িত হয়ে যে চিত্তমীল রূপসুন্দর গড়ে ওঠে শিল্প কলা বা সংজ্ঞাপন শিল্প বলে।



জৈবের বাস থেকে গড়ে ওঠে অনুমাত্রী : উল্লিখিত জৈব গাধার আশ্রয়-প্রভিষ্টি Chokwe শিল্পী কর্তৃক নথিভুক্ত : মান্দ্রা বটিকালি কর্তৃক বাস্য অমর কোমর প্রাক্তন একজন এবং একজন জাপানি শিল্পী দ্বিত্ব।

এ কলা মানব ক্রিয়াকলাপের বৈচিত্র্য পূর্ণ এক দৃশ্য প্রকাশ এবং এ ধরনের কাম
একত্বের মূল্য প্রাপ্ত পণ্য বা উৎপাদন।

দৃশ্য বা আবিষ্কৃত্যে বস্তু জিন্স কলমেই অঙ্কন রূপ, চিত্রকলা, লেখকর্ম, নাসচিত্র
আলোকচিত্র এবং অন্যান্য দৃশ্য অধিকার ক্ষেত্রে সৃষ্টি চিত্র বা বস্তু প্রকাশিত
আলোকচিত্র রম্যে, অধিকার দৃশ্যমান জগতে আমর যে চিত্রায়ত লীলায় অতিষ্ঠ
লাভ করি তাকে প্রকৃতি হিমেই অতিষ্ঠ করা হয়, তা জিন্স নয়, এই প্রকৃতির সৌন্দর্য
আলোকন করে মানব মন মগন বিমুগ্ধ, বিমুগ্ধ ও বিমুগ্ধ হয়ে যায় তখন সে
তার নিজের মন্য আসন করে পেতে চায়। একই ধারাবাহিকতায় যে চায় সেই কলা
চিহ্নিতক একই স্বাভাবিক রূপ দিও, আর এর মন্যই হল জিন্সের অর্থ্য

চিত্রায়ত ও চিত্রকল চিত্রায়ত
প্রকৃতিক জিন্সের নিজস্ব অতিষ্ঠতা
থেকে উদ্ভূত হও বেগা, ক্ষয় বা
রূপান্তর আমর প্রকারে করে সেই
অনুভূতি অন্যর মন সজ্জার
মন্যই একই পরিমার্জিত
সজ্জার চিত্রায়ত জিন্স বা A.M.
হিমেই অতিষ্ঠ করা হয়।

এই নিবন্ধটি মূলত দৃশ্যজিন্স, চিত্রকর্ম, লেখকর্ম, নাসচিত্র, আলোকচিত্র এবং অন্যান্য
দৃশ্যজিন্সের উপর আলোক পাও করা হয়েছে, স্থাপত্য, অনন্যময় দৃশ্যজিন্সের
উপর পাও অনেক প্রাজ্ঞোজিন্সের মতো অস্বল্প মতায় পূর্ণ মৌলিক বিষয়ের
উপর দৃষ্টতাকই জিন্স কলা হলে, এই বিজ্ঞান বিজ্ঞান প্রাকৃতিক মন্য সীমার
জিন্স, অস্বল্প মতায় পূর্ণ চিত্রকলাকে বিজ্ঞান করা হয়েছে অধিকার বিষয়জিন্স
থাকে, যেখানে মাজিয়ার বিষয় জুগু। বৈজ্ঞানিক মূর্তির পর জিন্সকে দেখা যায়
মানব চিন্তায় যা ধর্ম এবং বিজ্ঞান দ্বারা চিহ্নিত করা হয়

এর অপর নাম চিত্রজিন্স, কারতজিন্স, ললিতকলা, চিত্রকলা ইত্যাদি।
যে জিন্সের এই সৌন্দর্য সৃষ্টি করে সে হল জিন্স বা A.M.A.J. জিন্সি মাত্রই
রূপ- বিমোহী এবং তার সৃষ্টি রূপই হল জিন্স, জিন্সের চিত্র সজ্জা, অনুভূতি
ও অন্যান্য সূত্রকে মূল ধর জিন্সের প্রকৃতি নির্ভর করে কনসেপ্ট ও দর্শনের উপর
যা একটি জাতিক ধারা দেয়।

লোকস্বত্ব মানে - জন্ম থেকে মৃত্যু।

লোকস্বত্বের আত্মিক অর্থ বলতে গেলে এক কথায় লেখান দাঁড়
যে জীবন এবং মৃত্যু মাত্র কল্পনা জগৎ বা আত্মায় হবে গড়ে থাকে
তার থেকে চোখে অমূল দিয়ে নির্দিষ্ট দেখা জানাবে বলে ক্যান্সার এবং
মার্টিন এই দুইটি বা চিহ্ন মতো জটিল করার জন্য সম্মোদন করে আত্মার
দেয়ার মোগ্রা করে গেলে, এবং জিন্স বলা জীবনের কথা গরতে লেখা
এবং জীবনের কথা বলতে লেখাও।

গোপনীয়

আমি এই প্রজেক্ট করতে গিয়ে আমাদের

বস্তু :- অবিচ্ছিন্ন রঙের অন্তরায়িত $\sin$ এর আধার নিম্নে,
অন্য বস্তু এর কথা আমি এই প্রজেক্ট আধার নিম্নে,
এবং Uniform Resource locator এর আধার ও নিম্নে,

17

কালিন্দার
মহাবিদ্যালয়

নাম → পূজাশিব

অর্থিক সাহায্য → ২১১০০৬

কেন্দ্রীয় → ৪র্থ

রেজি নং → ২২২১২১৪০০০২৪

বিভাগ → বাংলা

প্রকল্পের বিষয় → প্রাথমিক শিক্ষার কার্যক্রমে
উন্নয়ন

তারিখ - ০৬/০৬/২০২০



ESTD-1985

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS, PIN: 743442, PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Puja Gini

Roll No 211006 Registration/Student ID No

... 1222121400024 Session 2022-23

Of Bengali (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Proof Correction and Computer Bangla

... type

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester ... 4th ..

..... Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date 08/08/2023

Pradip Sardar
Signature of Supervisor
Department of Bengali

Head
Department of Bengali
Kalinagar Mahavidyalaya

— ୦ ଅନୁଚିନ୍ତା ୦ —

	<u>କ୍ଷିପ୍ର</u>	<u>Page</u>
୧.	କମ୍ପିଉଟରରେ ବାଟଲା ଲିଖନ	— ୧
୨.	ସ୍ଥୁଆ ଓ ଅନୁକ୍ରମିକ	— ୨
୩.	ବୃତ୍ତାନ୍ତ ଆକାର	— ୩

শ্রুত সংশোধন

একদিন জ্বাৰৰ ঝালো নতুন নতুন জ্বাৰৰ উপৰ সৰুখুনি
চৰতে দিহা বন্ধৰ পালে বাপ্পাদিগ অৰণ অৰণ য়ে
বোৰা দ্বিধেন হোৱাৰ বুলনৰ পৰ, ৰাজ পুত্ৰদেৱ বড়
আনন্দেৰ দিন অকাল ন হওঁ দলে দলে ৰাখান
নতুন বগলত পালে, বোৰ হোৱাৰে বোৰে বোৰে
বৰে নতুনতাবোৰ ৰাজপুত ৰাজ্যৰ বাহিৰ দিকে সোনা
হোৱা হুঁচল।

৭/১৮/৮১কদিন জ্বাৰৰ ঝালো নতুন ১/১/৮১জ্বাৰ ১৮১৮১৮
উপৰ সৰুখুনি চৰতে দিহা বন্ধৰ ৮৮/
১০১৫ পালে বাপ্পাদিগ অৰণ য়ে বোৰা দ্বিধাঃ/৮১৮৮
হোৱাৰ বুলনৰ পৰ ৰাজ পুত্ৰদেৱ
বড় আনন্দেৰ দিন, অকাল ন হওঁ ৭/
৮১৮১৮ দলেদলে ৰাখান বাপ্পাদিগ ৮/
৮১৮১৮/৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮
৭/১৮/৮১৮ নতুনতাবোৰ ৰাজপুত ৰাজ্যৰ বাহিৰ
১৮১৮১৮৮/৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮ ৮১৮

<u>বাংলা বর্ণ</u>	<u>Keyboard word</u>	<u>বাংলা বর্ণ</u>	<u>Key board word</u>
অ	O	ঐ	dh
আ	A	ই	h
ই	i	এ	p
উ	I	ঋ	ph
ঊ	U	ৠ	bh
ঋ	U	ৡ	bh
ঌ	mi	ৢ	M
঍	e	ৣ	Z
঎	OI	৤	r
এ	O	৥	
উ	ou	০	B
ঊ	K	১	Sh
ক	Kh	২	sh
খ	g	৩	h
গ	gh	৪	R
ঘ	ng	৫	Rh
ঙ	e	৬	y
চ	ch	৭	t
ছ	j	৮	ng
জ	jh	৯	:
ঝ	Ng	10	n
ট	T	০	khya
ঠ	Th	১	
ড	D	২	
ঢ	Dh	৩	
ণ	N	৪	
ত	t		
থ	th		
দ	d		

কৃষকতা - শ্রীকার

আমি আমার বাবা-মা-বিক্রয়ের অল্প
-জিহ্বক ও -জিহ্বিকাদের আকৃষ্ট করে
বিল্যাদ অর্জন।

প্রকল্পটি তৈরি করে তারপর অর্থায়ন
করছেন। প্রকল্পের বিবরণ প্রকল্প তৈরি, ও বহু
স্বল্পমূল্যে অন্য ও অর্থায়ন দিয়ে প্রকল্পটি অর্থায়ন
করার ক্ষেত্রে -অর্থায়ন করা হচ্ছে। আর এতে প্রকল্প
টির জন্য আরও বিস্তারিত করে গাণিত্য করছেন
৫: কৃষকদের চমোপাধিগত। আর অন্য আমি আমার
অর্থায়ন করে বিস্তারিত করে কৃষকতা অর্জন।

-জিহ্বক / -জিহ্বিকার মাধ্যমে

৪/০৪/২৩

তারিখ

স্বাক্ষর

৫/৪/২৩ মাধ্যমে

WEST BENGAL STATE UNIVERSITY



लक्ष्यं विश्रामानम्

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA



SUBJECT - HISTORY PROJECT

TOPIC- ARCHIVES AND MUSEUMS

SEMESTER - 3rd

YEAR - 2022

COURSE CODE- HISSSEC01M

NAME - MRIGENDRA MONDAL

COLLEGE ROLL NO.- 211302

REG. NO-1222111100007

DATE- 29/11/2022



ESTD-1985

KALINAGARMAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS, PIN: 743442, PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Mrigendra Mondal

Roll No 211302 Registration/Student ID No 1222111100007

Session 2022-2023

Of History (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Archives and museums

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester III

(3rd) Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date

Subrata Biswas
Signature of Supervisor
Department of History

Subrata Biswas
Assistant Professor
Department of History
Kalinagar Mahavidyalaya

ARCHIVES AND MUSEUMS

DATE EXPT. NO.

আর্কাইভস বা লেফ্‌জার কাকে বলে : -

আর্কাইভস বা লেফ্‌জার বলতে আমরা একটি জ্ঞানকে বুঝি। যেখানে ঐতিহাসিক তথ্যের উদ্ভাৱন, সংরক্ষণ, ভর্তুকি নথি, নথির সংকলন ও উৎসবুধ বিজ্ঞানিক উপায়ে নথির সংরক্ষণ করা হয়। ইংরেজি শব্দ Archives থেকে গ্রিক শব্দ Archeion থেকে। আর Archeion শব্দটি থেকে Arch থেকে। আর ভগ্ন সংরক্ষণি অর্থাৎ বা প্রমাণনিক তথ্যে প্রধান নথি সংরক্ষণের ব্যবস্থা করা হয়। লেফ্‌জার একটি সামাজিক, প্রমাণনিক, ঐতিহাসিক, আইনগত ও জ্ঞানসম্মত নানা বিধি কামবলি তথ্যের উদ্ভাৱন বিজ্ঞান বিবেচিত হয়।

প্রকার ভেদ :-

১) মিষ্ণা আৱান্ত লেফ্‌জার :- বিশ্ব বিদ্যালয়, মহাবিদ্যালয় বা অন্য কোনো মিষ্ণা প্রতিষ্ঠান প্রমাণনিক নথি, মিষ্ণা প্রতিষ্ঠানের আৱান্ত কামবলি কীতি তথ্য সংরক্ষণ ও অৱান্তক তথ্য সংরক্ষণা বিমসক নিবন্ধ প্রণয়, নথি বিজ্ঞান সংরক্ষিত হয়।

উদাহরণ - ১৭৮৪ খ্রিঃ প্রতিষ্ঠিত ডেমিগাটিক ডাফাইটি - 1 no. শব্দ ইংরেজি শব্দে সংলগ্নতা

Teacher's Signature

(ii) ব্যবসায়িক লেখ্যাকার :- ব্যক্তিগত বা ব্যবসায়িক
সংগঠন বা বহুজাতিক বানিজ্যিক অংশীদারিত্ব
ব্যক্তিগত বিষয় অংশীদারিত্ব করতে এইরকম লেখ্যাকার
প্রতিষ্ঠা করে।

উদাহরণ :- ১৯৫৪ খ্রি: প্রতিষ্ঠিত রিমালমান আইল -
নিমারি। ইনভিটেড ইউজিয়াস ডায় অবর্ত।

(iii) অরকারি লেখ্যাকার :- জাতীয় রাজ্য বা আঞ্চলিক
স্তরের অরকার দ্বারা প্রতিষ্ঠিত এবং অরকারি বিভাগের
নামে অংশীদারিত্ব হয়।

উদাহরণ - ১৯৬০ খ্রি: প্রতিষ্ঠিত রাজ্য প্রজাতন্ত্রিক ক
অংশীদার, অংশীদার কোড কোড কোড।

(iv) অ - বানিজ্যিক লেখ্যাকার :- মূলত ব্যক্তিগত বা অংশীদারিত্ব
ব্যক্তিগত এবং মূলধনের ভিত্তিতে এই অংশীদার বা ব্যক্তি
অংশীদারিত্ব অংশীদারিত্ব থাকে,

(v) কোনো একটি বিশেষ বিশেষ বিশেষ বৈশিষ্ট্য লেখ্যাকার :-

উদাহরণ :- প্রাক ইউজিয়াস ইউজিয়াস
কোড কোড কোড (১৯৬৫)

(vi) অংশীদারিত্ব লেখ্যাকার :- কোনো ব্যক্তি ব্যক্তিগত
বা অংশীদারিত্ব অংশীদারিত্ব দ্বারা মূলধন কোনো লেখ্যাকার
অংশীদারিত্ব অংশীদারিত্ব লেখ্যাকার অংশীদারিত্ব। বিভিন্ন
অংশীদারিত্ব ও অংশীদারিত্ব অংশীদারিত্ব ও অংশীদারিত্ব বানিজ্যিক
অংশীদারিত্ব - অংশীদারিত্ব, অংশীদারিত্ব অংশীদারিত্ব,

DATE

EXPT.
NO.

ଏକଜିଡ଼ ପ୍ରକୃତିର ଦ୍ଵାରା ଏହି ସିଦ୍ଧାନ୍ତର ଲେଖାଯାଏ ନାହିଁ ।
ଏହି ଲେଖାଯାଏ ଲେଖାଯାଏ ଯୁକ୍ତି ବ୍ୟକ୍ତି ଜାତ ଜାତ ଆଦି ଯାଏ ।
ଜ୍ଞାନା ଯେଉଁ ଅବସ୍ଥାରେ ନା ଜ୍ଞାନା ବାସିନ୍ଦାଙ୍କ ଅବସ୍ଥା ଯେଉଁ ଅବସ୍ଥା
ଆହାନ୍ତ ଯାଏ । ଏହି ଲେଖାଯାଏ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଉଦାହରଣ: ଆହାନ୍ତର ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ

(vi) ଚଳଚ୍ଚିତ୍ର ଲେଖାଯାଏ :- ଯଦିଓ ଲେଖାଯାଏ ବଳରେ ଆହାନ୍ତ
ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଚଳଚ୍ଚିତ୍ର ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଆହାନ୍ତ ଚଳଚ୍ଚିତ୍ର ଲେଖାଯାଏ ବଳରେ ଆହାନ୍ତ
ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ନାହିଁ , ଆହାନ୍ତର ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ

ଉଦାହରଣ: ଲେଖାଯାଏ ଆହାନ୍ତର ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ (୨୦୧୫)

(vii) ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଲେଖାଯାଏ :- ଯଦିଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ
ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଆହାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଆହାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଆହାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ

ଉଦାହରଣ: ଆହାନ୍ତର ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ

ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ
ଆହାନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ଯେଉଁ ଯୁକ୍ତିର କମ୍ପିରା ଅବସ୍ଥାରେ

DATE	
EXPT. NO.	

হৈদার ন্যায়মানাল বগটখিল অথচ সিন্ধিয়ারের বিধি অনুসারে
সিন্ধিয়ারের সা. অ. ২ আনা ৬- লাং অনেক অসুস্থ হওয়ার
ফলস্বরূপ অসুস্থের উন্নতির লক্ষ নিম্নলিখিত আশি
অ. আ. মা অন্তর্ভুক্তির জন্য উল্লিখিত। যেখানে নমুনা
অ. অ. ২২ হই বিস্ময়ে অসুস্থতা হই, অন্তর্ভুক্তির
প্রাপ্ত ৩য় প্রদান করে। অসুস্থতা, অসুস্থ ও অসুস্থতার
অন্য অন্তর্ভুক্তির উল্লিখিত করে। যে ফুলি হল মানব
হাসি ও তার ও পরিচয়ের বস্তু চরিত্রের প্রদান।

ସବୁ ପ୍ରକାର ଆହୁରଣାଳା ଆଦି ଯୋଗେ ଇତିହାସିକ ଯନ୍ତ୍ର
 ଇତିହାସର ଆବିଷ୍କୃତି ସମ୍ପର୍କିତ ଉଲ୍ଲେଖ କରା ହେବ -

(ii) মিল্ক ডায়ুজেনালা :- ডায়ুজেনৰ ব্যৱহাৰিত ভাৰসৱৰ পৰা
ঠিক নকৰা দুগ্ধ ইত্যাদি ব্যৱহাৰিত ও প্ৰদৰ্শিত হয় ।
বৈদ্যৰ্থ - অক্সিজেনেট' অ্যাম্বলিঅন ।

EXPT.
NO.

Teacher's Signature

DATE	
EXPT. NO.	

ଆହାର ଆଳାଚ) ପୁରା ଜନ୍ମ ଏବଂ ତାର ଆନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀତ୍ବ :-

ଆହାର ଆଳାଚ) ପୁରାଜନ୍ମ 'ରୁମାଏ' ଏବଂ 'ସୁନ୍ଦ' ଥିବା ମୁଦ୍ରା ପ୍ରଚଳିତ ଗିରିର ମୁଦ୍ରା । ଏ ମୁଦ୍ରାକୁଳି ଆନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀତ୍ବ ଜ୍ଞାନ, ଶାନ୍ତ ଏବଂ ତାହା ଲାଭ କରା ଗୋଟିଏ ସ୍ତମ୍ଭ ନିର୍ମିତ । ଏ ମୁଦ୍ରାକୁଳି ରୁମାଏ ଏବଂ ସୁନ୍ଦ ମାୟାକାରୀ ପ୍ରାଚୀନ କାଳର ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ପ୍ରଥମ ଅତରାମ୍ଭର ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ମଧ୍ୟ ଅତରାମ୍ଭର ଅନ୍ତର ।

ରୁମାଏ ମୁଦ୍ରା ମଧ୍ୟ ମୁଦ୍ରା:-



ରୁମାଏ ମୁଦ୍ରା ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗ୍ଗନ୍ତର ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ଓ ତତ୍ତ୍ୱମୁଦ୍ରା ରାସ୍ତାରେ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତି କରିବା ଲାଗେ । ରୁମାଏ ମୁଦ୍ରାଟି ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର କାନ୍ଦାଳି ପ୍ରାଚୀନ ଅନ୍ତରାତ ଡାକ୍ତରୀ ଅର୍ଥମୁଦ୍ରା ଡାକ୍ତରୀ କାଳର । ତାହା ମୁଦ୍ରା ମୁଦ୍ରା ଦିନେ ଗିରିର ମଧ୍ୟରତ ରାଜ୍ୟର ଏ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଦିନେ ମାୟ, ତା ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ହିଁ ଆନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ ମାୟାକାରୀ ଗୋଟିଏ ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ଡାକ୍ତରୀ ଅନ୍ତରାତ ନକାମା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଦାନିତ । ଏହାକୁ ରୁମାଏ ମୁଦ୍ରାଟିର ମଧ୍ୟ, ଗିରିର କାଳ କାଳିକା ଓ ଶ୍ରୀମନ୍ତ୍ର ତାହାର ମଧ୍ୟ ମୁଦ୍ରାଟିର ମଧ୍ୟ ଗିରିର ନକାମା ଓ ପ୍ରାଚୀନ ରାସ୍ତାରେ କାଳିକା । ଏହାଟିକି ମ, ପ୍ରାଚୀନ ରାସ୍ତାରେ ଅନ୍ତରାତ ରୁମାଏ ମୁଦ୍ରାଟିର ଅନ୍ତରାତ ହିଁଲନା; କିନ୍ତୁ ରାସ୍ତାରେ ମଧ୍ୟରେ ଆନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ ମୁଦ୍ରା

Teacher's Signature

EXPT.
NO.

সুশান্ত মুখার তাল্পদ্মদা :



Teacher's Signature

DATE _____

EXPT.
NO. _____

কিন্তু তার সাধারণ প্রচলিত ৩ ফলে প্রাচীন সাালায় সুদার্যক্সার
 অথবা সুমায় তাম্রমুদ্রা অবিচ্ছেদ্যে সম্পৃক্ত হয় যায়। সুমায়-
 এর অভিধাতু লম্বা মার সুমায় তাম্রমুদ্রার তাম্রকরণে সাালায়
 নতুন আয়তন তাম্রমুদ্রা নির্মাতার প্রতীক। তবে আচীর্য অনুকৃত
 তাম্রমুদ্রা নির্মাতার প্রতীক। তবে আচীর্য অনুকৃত তাম্রমুদ্রা
 সুদার্যক্সার আয়তন। হাফে উত্তর ও দক্ষিণ চক্রিক পরস্পর, বর্ধমান
 ও স্বাধীনতা প্রদান করে। তবে এ অনুকৃত তাম্রমুদ্রাগুলির ওজন
 ০.২ গ্রাম থেকে ২.৪৮ গ্রাম পর্যন্ত।

সুপ্ত মুদ্রার ধর্ম মুদ্রা:-



• প্রথম চন্দ্রগুপ্ত (মল্ল) বিষ্ণুগুপ্ত (দ্বিতীয়) সম্মুখ অংকের
 প্রতীক) পর্যন্ত বিভিন্ন মুদ্রা সম্মুখে নতুন প্রকারের ধর্ম
 মুদ্রা প্রদান করে। তবে ধর্ম মুদ্রার অন্তর্গত বিভিন্ন লম্বা
 প্রথম মুদ্রার মুদ্রার আয়তন কালে (৪০৪-৪৫৪/৫৫খ্রি) সাালায়
 সাালায় ভারিষ্ঠিত বিভিন্ন প্রকারের মুদ্রা ধর্ম মুদ্রার একটি অংশ
 অধিষ্ঠিত প্রদান প্রদান হয়। সুপ্ত মুদ্রার অন্তর্গত
 অধিষ্ঠিত উদাহরণ ও লম্বা কিছু মুদ্রার প্রদান দিলে (অনুষ্ঠান)
 প্রতীক প্রদান হয়।

সুপ্ত অথবা সাালায় ধর্ম মুদ্রায় উল্লিখিত অধিষ্ঠান অনুষ্ঠান অনুষ্ঠান

Teacher's Signature

EXPT. NO.	
--------------	--

ଉତ୍ପତ୍ତି ମୁହାଁର ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ:-



Teacher's Signature

ଆହୁତିର ବିଭିନ୍ନ ଗାଳ୍ପ ଧରିଲକ୍ଷିତ ହେ, ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ ତାହାକୁ
ପ୍ରକାର ଅନୁସାରେ ଆହୁତିର ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ ପ୍ରକାର ରହନ କାହିଁ।

୧. ପ୍ରକାର ମାନ ଆହୁତିର ଗାଳ୍ପ :- ପ୍ରକାର ମାନ ଆହୁତିର
ବିଭିନ୍ନ ଲିଖନୀୟ ଓ ଉପାଦାନର ଅନୁସାରେ ବିଭିନ୍ନ ଗାଳ୍ପ
ଓ ଉପାଦାନର ଲିଖନୀୟ ଉପାଦାନ ଓ ଉପାଦାନ ବି ବି
ସିଦ୍ଧିର ଉପାଦାନର ଗାଳ୍ପ ଓ ଉପାଦାନର ଗାଳ୍ପ ଗାଳ୍ପ
ଘଟି ଆହୁତିର ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ ଗାଳ୍ପ। ଉପାଦାନ
ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଓ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ବିଭିନ୍ନ ଉପାଦାନ
ତାହା ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଗାଳ୍ପ।

ଉପାଦାନ :-

(i) Jadughar, (200 years of the Indian
Museum), 1814 - 2014 - Sommitra Das

(ii) ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ ଓ ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ - ଉପାଦାନର ଉପାଦାନ

16/20

29.11.2022

Teacher's Signature

WEST BENGAL STATE UNIVERSITY



লক্ষ্যে বিশ্বমানম্

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA



SUBJECT - HISTORY PROJECT

TOPIC - UNDERSTANDING INDIAN ART

SEMESTER - 4th, YEAR - 2023

COURSE CODE - HISSEC02M

REGISTRATION NO - 1222121100016

COLLEGE ROLL - 211311

NAME - SHRABANI SARKAR



ESTD-1985

KALINAGAR MAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS. PIN: 743442. PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. Shrabani Sarkar

Roll No. 211311 Registration/Student ID No. 1222121100016

Session 2022-2023

Of History (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled Understanding Indian Art

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester 4th

(IV) Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date

Subrata Biswas

Signature of Supervisor
Department of History

Subrata Biswas

Assistant Professor
Department of History
Kalinagar Mahavidyalaya

❀ ভাৰতীয় শিল্প(বাঁ) ❀

* ভাৰতীয় শিল্প সম্ভাৰ্ণ আৰ্চিৱ কেন্দ্ৰ :-

আচাৰ ভাৰতীয় অৰ্থনৈতিক আৰু চৰ্তমাত্ৰ দিব অপৰূপ
ভাৰতবৰ্ষৰ অতি উঠা, শিল্প ক্ষেত্ৰত সম্ভাৰ্ণ আৰ্চিৱিত
লাভ কৰে। ইহঁদৰ দৰ্ঘ সম্ভাৰ্ণ শিল্প ক্ষেত্ৰত (সম্পদ)
(সম্পদ) চিহ্নিত কৰা এক. শিল্পৰ আৰ্চিৱ সম্ভাৰ্ণ
সম্ভাৰ্ণ আৰ্চিৱ হুণ্ডা এক. ইয়াৰ লাভ কৰে। ইহঁ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ দিব ভাৰতীয় শিল্পৰ চিহ্নিত কৰে
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ হুণ্ডা এক. ইয়াৰ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ হুণ্ডা এক. ইয়াৰ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
এক একটি দৰ্ঘ শিল্প আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
সম্ভাৰ্ণ শিল্প আৰ্চিৱ, শিল্প আৰ্চিৱ
শিল্প আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ

* আৰ্চিৱ শিল্প আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ সম্ভাৰ্ণ :-

আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ
আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ আৰ্চিৱ



Bhitargaon temple in Kanpur district, Uttar Pradesh,
India

ভিতরগাঁও মন্দির

লক্ষ্য করিয়াও পারত। যদিও এক মাত্র যিহ
 মন্দির ছিল, এছাড়া বহুসংখ্যক বহু মন্দির, একই
 উত্তর (দক্ষিণ) (দক্ষিণ) (দক্ষিণ) মন্দির। ইতি
 মন্দির (মন্দির) মন্দির বহু লক্ষ্য করিয়াও
 পারত। পারত। এক। পারত। মন্দির
 মন্দির।

মন্দির মন্দির ছিল উত্তর এক। মন্দির
 উত্তর মন্দির ইতি (মন্দির) মন্দির
 মন্দির আরও বহুসংখ্যক মন্দির। মন্দির
 (মন্দির) মন্দির মন্দির, মন্দির (মন্দির)
 মন্দির এক। মন্দির মন্দির মন্দির
 (মন্দির) মন্দির (মন্দির) মন্দির, মন্দির
 মন্দির এক। মন্দির মন্দির মন্দির
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির।

* মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির :
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির
 মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির মন্দির



शिव मन्दिर (Shiv Mandir)



અજંતા ગુફા સુશાહિન

ગુપ્તપૂર્વે જાણી મુખ્ય ઉભાચારે સિલ્સલાકા મુખ્ય,
જાણી મુખ્ય હિન્દુ, બોદ્ધ કે જોઈ ઈર્મ લાલિય.
જિવે વગર અજાણ, મધ્ય, ઉદ્યુદ્ય, બધા (સાધિત
કૃતિ વિમિત. સિર મધ્ય ઉદ્યુદ્ય લિપ્યુદ્ય
અજાણિત, પદિત પ્રત્યે મધ્યિત વર્તિકાનિ વર્તે વિષુ,
દમ્યુ પ્રત્યે મધ્યલિપ્યુદ્ય, વર્તિકાનિ ઉ મધ્યિત
વર્તિકાનિ જાણી જાણી (મધ્ય).

ଏହା ଏକାଧାର ମାନସିକ ଶିକ୍ଷଣ, ଅନ୍ତର୍ଭାବ ସୁଧା ଶୁଦ୍ଧିକାରି
 ଶାସ୍ତ୍ର (ସାହିତ୍ୟ) ଓ ଗୁରୁ ଶାସ୍ତ୍ରଦ୍ୱାରା ଓ ଅନ୍ତର୍ଭାବ ଶିକ୍ଷଣ ମଧ୍ୟରେ
 ଉପଲବ୍ଧି ଶାସ୍ତ୍ର ସିଦ୍ଧାନ୍ତ, ବାହ୍ୟ ଓ ଅନ୍ତର୍ଭାବ ଶାସ୍ତ୍ର
 ଦିକ୍ଷା, ଆହୁତି ଅନ୍ତର୍ଭାବ, ସିଦ୍ଧାନ୍ତାନ୍ତର୍ଭାବ ଶାସ୍ତ୍ର ମଧ୍ୟରେ
 ଶିକ୍ଷଣ ଆମାନ୍ତ ଶାସ୍ତ୍ର ଆମାନ୍ତ ଶାସ୍ତ୍ର ଆମାନ୍ତ ଶାସ୍ତ୍ର (ଶିକ୍ଷଣ
 ଶାସ୍ତ୍ର) ।

* ଶିକ୍ଷଣ :- (1) ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶିକ୍ଷଣ = ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 (2, ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ (2

(2) ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶିକ୍ଷଣ (ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ) ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ

* <https://www.hindutsev.com> - ଏହା ଶାସ୍ତ୍ର
 ଆମି ଶାସ୍ତ୍ର ମାନ୍ୟ ଶାସ୍ତ୍ର (ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ, ଶିକ୍ଷଣ ଶାସ୍ତ୍ର)

* <https://en.m.wikipedia.org> - ଏହା ଶାସ୍ତ୍ର
 ଆମି ଶାସ୍ତ୍ର ମାନ୍ୟ ଶାସ୍ତ୍ର (ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ, ଶିକ୍ଷଣ ଶାସ୍ତ୍ର)

* ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶିକ୍ଷଣ :-

ଆମି ଶାସ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 ଶାସ୍ତ୍ର ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 ଶାସ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ
 ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ ଶାସ୍ତ୍ରୋପାୟ

ଆମେ ଏହି ମାଧ୍ୟମରେ ବିଭିନ୍ନ ପଦାର୍ଥର ଗୁଣ ଓ ପ୍ରକୃତି ଉପରେ ଗବେଷଣା କରିବା । ଏହା ଆମର ଜ୍ଞାନକୁ ବଢ଼ାଇବା ଏବଂ ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା । ଏହା ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା ଏବଂ ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା ।

ଆମେ ଏହି ମାଧ୍ୟମରେ ବିଭିନ୍ନ ପଦାର୍ଥର ଗୁଣ ଓ ପ୍ରକୃତି ଉପରେ ଗବେଷଣା କରିବା । ଏହା ଆମର ଜ୍ଞାନକୁ ବଢ଼ାଇବା ଏବଂ ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା । ଏହା ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା ଏବଂ ଆମର ଧାରଣାକୁ ଠିକ୍ କରିବା ।

6.6.23
 (18)



पश्चिमवङ्ग-राष्ट्रिय-विश्वविद्यालयाधिनस्य



10/10

24.05.2023

Head
Department of Sanskrit
Kalidasa Mahavidyalaya



कालिदासगणमहाविद्यालयस्य

संस्कृतविभागे

२०२३-तमे शिक्षावर्षे

CC-१३ - पाठक्रमे

-प्रकल्पकार्यम्-

प्रकल्पविषयः-

तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः

अध्येतृनामः - विष्णु-मण्डलः

श्रेणी- स्नातक-साम्मानिक-तृतीयवर्षः

श्रेणीक्रमाङ्कः - २०१२०६

विश्वविद्यालयक्रमाङ्कः - १२२२०१११०००५३





ESTD-1985

KALINAGARMAHAVIDYALAYA

Government Aided College Affiliated to the West Bengal State University

P.O.: KALINAGARHAT, NORTH 24 PARGANAS. PIN: 743442. PHONE-8328719680

CERTIFICATE OF PROJECT/HOME ASSIGNMENT

This is to certify that Sri/Miss/Smt. BISHNU MONDAL

Roll No 201206 Registration/Student ID No 122 2011100053

Session 2022-2023

Of Sanskrit (CC-13) (Hons/Gen) has completed his/her

Project entitled तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः

under my guidance and supervision for the degree of B.A. Semester 6th

Examination under West Bengal State University.

He/she has completed the report satisfactory and it may be placed before the examiner for their consideration.

Date: 24.05.2023

Rahul Dev Biswas

Signature of Supervisor
Department of Sanskrit

Head
Department of Sanskrit
Kalinagar Mahavidyalaya



पश्चिमवङ्ग-राष्ट्रीय-विश्वविद्यालयाधिनस्य
कालिनगर-महाविद्यालयस्य



संस्कृतविभागे

प्रकल्पविषयः -

तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः

पुर्णमानम्	प्राप्तमानम्	शिक्षकस्य स्वाक्षरम्

२०२३-तमे शिक्षावर्षे षष्ठार्धवार्षिकसत्रम्

CC-१३ -पाठक्रमे प्रकल्पकार्यम्

अध्येतृनामः - विष्णु-मण्डलः

श्रेणीक्रमाङ्कः - २०१२०६

विश्वविद्यालयक्रमाङ्कः - १२२२०१११०००५३

श्रेणी- स्नातक-साम्मानिक-तृतीयवर्षः

प्रकल्पसहायकशिक्षकस्य स्वाक्षरम्

विष्णु-मण्डलः
अध्येतुः स्वाक्षरम्

विषयानुक्रमणिका

विषयः	पृष्ठसंख्या
कार्त्तिकप्रकटनम्	३
अज्ञेयभट्टस्य परिचयः	२
तर्कसंग्राह्यानुसारम् अभावः	३
अभावस्य प्रकारभेदाः	५
प्रागभावः	५
प्रध्वंसाभावः	६
अत्यन्ताभावः	७
अन्योन्याभावः	८
सहायकग्रन्थसूची	९-११

कार्तज्ञप्रकटनम्

संस्कृतशास्त्रपरम्परायां येभ्यः प्राचार्येभ्यः
 विद्याध्ययापकेभ्यः विद्या प्राप्तः तेभ्यः सर्वेभ्यः भूयो भूयः
 कार्तज्ञं प्रणामान् च विनिवेदयामि,

प्रकल्पे क्वचित् अज्ञतावशाद् अनवधाना
 वशात् वा यदि प्रमादाः स्युः तर्हि ग्रहं क्षमाप्रोथी अस्मि।

अन्नंभट्टः (तर्कसंग्रहकारः)

तर्कसंग्रहः इति ग्रन्थस्य ग्रन्थकारः महानैयायिकः
महामहोपाध्यायः अन्नंभट्टः। सः ख्रीष्टियः षोडशः शतकस्य
अन्तर्भागे दक्षिणभारतस्य निजामः इति राज्यस्य अन्तर्गतः
गिरिकपादः इति ग्रामे अजायत। मतान्तरे, कृष्णानद्याः तीरे
केशवपुरः इति ग्रामे सः अजायत। तस्य पितुर्नाम तिरुमलचर्यः।
तस्य ज्येष्ठः भ्रातुर्नाम रामकृष्णभट्टः।

तस्य अध्ययनस्य स्थानः काशीधामे आसीत्।
अन्नंभट्टः सर्वेषु शास्त्रेषु पारदर्शी आसीत्। न्यायवैशेषिक-
वेदान्त-मीमांसा-व्याकरणादि शास्त्रेषु तस्य पाण्डित्यः
सुपरिचितः। अनेकाः उक्तवन्तः यत् अन्नंभट्टः शिक्षालाभं कृतवान्
कौण्डिन्यपुरः इति जनपदे।

तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः

साधारणतः पदार्थः द्विविधः- सदर्थकः भावात्मको वा किञ्च न अर्थकः अभावात्मको वेति। एतयोः सदर्थको भावात्मको वा पदार्थः षड्विधः यथा- द्रव्यं, गुणः, कर्म, सामान्यं, विशेषः, समवायः चेति। न अर्थकः पदार्थः एकः एव अभाव इति। अभाव इति न्याय वैशेषिकसम्प्रदाये स्वीकृतः पदार्थः। किन्तु मीमांसकैः अभावः न स्वीक्रियते।

द्रव्यादिषट्पदार्थानां यत्र भेदोऽस्ति, सः अभावः इति। द्रव्यादिषट्पदार्थाः कस्मिन्नपि पदार्थे न तिष्ठति। अतः इदं न द्रव्यं, न गुणः, न कर्म इत्यादिरूपेण षट्पदार्थानां प्रत्येकस्यापि भेदः यत्र दृश्यते, सः अभावः इति।

अन्नं भट्टः अभावस्य साधारणं लक्षणं किमपि नोक्तवान् कारणं मन्यते यत् भावपदार्थं विना अभावस्य ज्ञानं भवितुं नार्हति। यथा क्षान्तस्य घटस्य ज्ञानाभावे घटाभावस्यापि ज्ञानं भवितुं नार्हति। तस्मात् द्रव्यादिभावपदार्थानां या अनस्तित्वप्रतितीः सः अभाव इति। भावभिन्नत्वम् अभावत्वम् एवंप्रकारेण अभावस्य लक्षणे कृते लक्ष्यं लक्षणस्य कृते स्वमेव आश्रयकरोति, आत्माश्रयदोषः स्यात्। किञ्च यावत्पर्यन्तम् अभावः न सिद्धः तावत्पर्यन्तं न अभावभिन्नत्वं भावत्वम् इति अभावस्य लक्षणं कर्तुं शक्यते। क्रियते चेद् अन्योऽश्रयदोषः भवेत्। अतः अभावत्वरूपोपाखण्डोपाधिः एव अभावस्य सामान्यलक्षणमिति अन्नं भट्टस्य मतमिति वक्तुं शक्यते।

अभावः यस्मिन् अधिकरणे तिष्ठति तदधिकरणं भवति
 अनुयोगि किञ्च यस्य अभावः स प्रतियोगी इत्युच्यते यथा
 भूतले घटाभावः इति उच्यते चेत् भूतलं भवति अनुयोगि किञ्च
 घटः प्रतियोगि यथा घटः चक्षुरिन्द्रीयेण गृह्यते तथा चक्षुरिन्द्रीये-
 णैव घटाभावः गृह्यते इति नियमः अतः प्रतियोगिनः
 सद्भावसाधकप्रमाणेन एव अभावः प्रमाणितो भवति, उत्पीठि-
 कार्या ग्रन्थः अस्ति इति यथा सत्यं भवति, तथैव लेखनी
 उत्पीठिकार्या नास्ति इत्यपि सत्यं भवति, एवमत्र अभावः
 कथमपि नाङ्गीकर्तुं शक्यते। एतदपि ज्ञातव्यं यत् धावपदार्थः
 इव अभावपदार्थोऽपि प्रत्यक्षी भवति। घट इव घटाभावादीनां
 मपि नामकरणादिकं भवति। अभिधेयत्वं, ज्ञेयत्वं, प्रमेयत्वं,
 इत्यादयः पदार्थाः साधारणधर्माः अभावेऽपि वर्तमानत्वात्,
 अभावस्य कथमपि अस्वीकारः कर्तुं न शक्यते।

मीमांसकस्य प्रभाकरस्य मते तु अभावस्य
 प्रत्यक्षं न भवति, वस्तुतः अभावरूपेण अस्माभिः
 केवलमधिकरणमेव दृश्यते। कारणं हि सर्वेऽपि धावपदार्थाः
 उत्पीठिकार्या ग्रन्थः नास्ति इति उच्यते चेत् तत्र अस्माभिः
 उत्पीठिकार्या ग्रन्थाभावो न दृश्यते किन्तु उत्पीठिका
 एव दृश्यते। अतः उत्पीठिका किञ्च ग्रन्थाभावः समानमेव
 वस्तु। तस्मात् अभावः अधिकरणस्वरूपः। किन्तु अन्नं भूतः उक्तवान्
 यत् अभावः नास्ति अधिकरणस्वरूपः। अयं तु वक्ष्येन अतिरिक्तः पदार्थः
 यदि अभावः भूतलस्वरूपः स्यात् तर्हि भूतले घटेऽस्त्येव भूतल-
 स्वरूपस्य अपरिवर्तितत्वात् घटाभावस्यापि प्रतीतिः तत्र स्यादिति किन्तु
 लोके तन्न भवति। अतः अभावः कश्चन अतिरिक्तः पदार्थः, निषेधात्मकशब्देन
 अभिहित इति।

अभावस्य प्रकारभेदाः

अभावः द्विविधः - संसर्गभावः अच्यो-
न्याभावश्चेति। पुनः संसर्गभावः त्रिविधः - प्रागभावः,
प्रध्वंसाभावः, अत्यन्ताभावश्चेति। अच्योन्याभावस्य नास्ति
कश्चन अवान्तरभेदः। किन्तु अन्नं भट्टः कणादमनुसृत्य
अभावस्य भेदविषये उक्तवान् - अभावश्चतुर्विधः प्राक्
अभावः, प्रध्वंसाभावः, अत्यन्तभावः, अच्योन्याभावश्चेति।
नव्य नैयायिक गङ्गेशोपाध्यायः चतुर्विधमभावमङ्गीकृतवान्
किन्तु न्यायमञ्जरीकारः जयन्तभट्टः उक्तवान् यत् अभावः
षड्विध इति। अत्र अस्माभिः अभावस्य विभागोः आलोच्यते।

प्रागभावः

आचार्येण अन्नं भट्टेन प्रागभावस्य लक्षणमुक्तम् -
'अनादिः सान्तः प्रागभावः' इति अर्थीत यः अभावः
अनादिः नाम उत्पत्तिरहितः किञ्च यस्य विनाशः अन्तो
वा अस्ति, सः अभावः प्रागभाव इति। आकाशादीं नित्य-
वस्तुनि अतिव्याप्तिवारणाय लक्षणे सान्त इति पदं प्रयुक्तम्
यतो हि यदि लक्षणे सान्त इति पदं न दीयते तर्हि
लक्षणं स्यात् अनादि प्रागभावः इति। आकाशादीनामपि
अनादित्वात् तस्मिन् लक्षणस्य अतिव्याप्तिः स्यात्। घटादी-
नामपि लक्षणे सान्त इति पदोपादाने सति नातिव्याप्तिः।

आकाशादीनाम् अनादित्वेऽपि सान्तत्वाभावात् । ननु पूर्वं
सति सान्तः प्रागभावः इत्येवं लक्षणं भवतु किमर्थं पुनः
अनादिः इति पदोपादानमिति चेदुच्यते तथा सति घटादौ
अतिव्याप्तिः स्यात् । घटादीनामपि सान्तत्वात् । अतः लक्षणे
अनादिः इति पदं देयमेव । घटादीनां सान्तत्वेऽपि अनादि-
त्वाभावात् नातिव्याप्तिरिति भावः ।

प्रागभावः प्रतियोगी जनयति, इत्यतः
प्रतियोगिनः उत्पत्त्यनन्तरमेव प्रागभावः नश्यते । तस्मा-
देव प्रागभावः सान्त इत्युच्यते । घटोत्पत्तेः पूर्वं सृष्टिः
'घटो भविष्यति' इत्याकारकव्यवहारः एव प्रागभावस्य
सद्भावे प्रमाणं भवति । यस्मात् समवायिकारणे कार्य-
प्रागभावस्य सद्भावः 'भविष्यति' इति क्रियया प्रमाणितो
भवति ।

प्रध्वंसाभावः

प्रागभावस्य विपरीतवैशिष्ट्ययुक्तो भवति ध्वंसा-
भावः इति । यस्मात् अस्य अभावस्य आदिरस्ति किन्तु
अन्तः नास्ति । अतः एव अस्य नाम ध्वंसः अर्थात् ध्वंसाभावः
इति । उत्पत्तेः परं यदि कस्यचित् कार्यस्य पुनः अभावः भवति
तदा तादृशः अभावः भवति ध्वंसाभावः इति । ध्वंसाभावः
पुनः विनष्टः न भवति । यतो हि ध्वंसाभावस्य अन्तः नास्ति
तस्मात् तर्कसंग्रहकारः अज्ञेयः अस्य लक्षणम् उक्तवान्-
'स्मादिरनन्तः प्रध्वंसः' उतपत्त्यनन्तरं कार्यस्य इति । यदि
लक्षणे अनन्त इति पदं न दीयते तर्हि घटादौ अतिव्याप्तिः
स्यात् । घटादीनामपि सान्तत्वात् । अतः लक्षणे अनन्तः इति पदम्

अवश्यमेव दृश्यम्, तथा सति नातिव्याप्तिः, घटादीनां सादृशे
अपि अनन्तभावात्, अपि च आकाशादौ अतिव्याप्तिवारणाय
सादिरिति पदं प्रयुक्तमिति बोध्यम्।

विनाशशीलवस्तुमात्रमेव ध्वंसाभावस्य
प्रतियोगि भवति, तस्मात् प्रतियोगिनि विनष्टे ध्वंसाभावः
तस्य समवायिकारणे तिष्ठति, यथा कपालवृषसंयोगेन
घट उत्पद्यते, पुनः घटध्वस्ते कपालो एव तिष्ठतः, तयोः
कपालखण्डयोः एव ध्वंसस्य बोधो जायते, तस्मात् 'घटो
ध्वस्तः' इति वचनमेव ध्वंसाभावस्य सूत्रादे प्रमाणमिति
अत्यन्ताभावः

अत्यन्ताभावस्य लक्षणमुक्तम् आचार्येण
अनंभट्टेन - 'त्रैकालिकसंसर्गवच्छिन्नप्रतियोगिताको-
ऽत्यन्ताभावः' इति, अर्थात् यः अभावः त्रैकालिकः किञ्चा
यस्य प्रतियोगिता तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्ना, सः अभावः
अत्यन्ताभाव इति, यथा- भूतले घटो नास्ति इत्युक्ते
घटाभावः, वर्तमानादिषु त्रिषु कालेषु एव तिष्ठति,
अत्यन्ताभावस्य आदिरपि नास्ति, अन्योऽपि नास्ति,
इत्यतः अयं नित्यः, त्रैकालिकपदेन प्रागभावः प्रध्वंसाभा-
ववर्त्यते, अन्योन्याभावे अतिव्याप्तिवारणाय लक्षणे
संसर्गवच्छिन्न इति पदं प्रयुक्तम्, यतो हि अन्योन्या
भावे प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धः तु तादात्म्यं किन्तु
अत्यन्ताभावे संसर्गवच्छिन्न इति।

अन्योन्याभावः

तादात्म्येन यस्य प्रतियोगिता अवच्छिन्ना अर्थात्
विशेषिता भवति, तादृशः अभावः अन्योन्याभाव इति।
यथा- घटः पटो ज्ञेति, अन्योन्याभावस्य नामान्तरं भवति
भेद इति। घटः न पट इत्युक्ते घटे घटस्य तादात्म्यं
नास्तीति अवगम्यते। तादात्म्यं नाम अभेदः। अत्र घट-
पटयोः परस्परं तादात्म्यस्य निषिद्धत्वात् उभयोः मध्ये
अन्योन्याभावः अस्तीति ज्ञायते। अर्थात् घटः न पटः
नापि पटः घट इति शम्।

सहायकग्रन्थसूची

- १) तर्कसंग्रहः ; यदुपतित्रीपाठी ; वि. एन. पावलिकेशान्
- २) तर्कसंग्रहः ; शर्वनीगाङ्गुली ; संस्कृतबुक डिपो; कोलकाता
- ३) तर्कसंग्रहः ; युधिष्ठिरगोपः ; संस्कृतबुक डिपो; कोलकाता
- ४) तर्कसंग्रहः ; नारायणचन्द्रगोस्वामी ; संस्कृतपुस्तकभाण्डार
- ५) तर्कसंग्रहः ; पञ्चाननशास्त्री ; कोलकाता ; कोलकाता
- ६) तर्कसंग्रहः ; कमलकृष्णचक्रवर्ती ; कोलकाता
- ७) तर्कसंग्रहः ; शान्तनुकुमारचक्रवर्ती ; बनारस बर्किन्हाइल
कोम्पानि ; कोलकाता.
- ८) तर्कसंग्रहः ; सञ्जितकुमारसोर्धुखा ; सदेश;
- ९) तर्कसंग्रहः ; श्रीनिरञ्जनस्वरूपब्रह्मचारी ; संस्कृत बुक डिपो;
कोलकाता.
- १०) तर्कसंग्रहः ; डॉ० श्रीरवीन्द्रशास्त्री ; संस्कृतपुस्तकभाण्डार;
कोलकाता.
- ११) तर्कसंग्रहः ; राजेन्द्रघोषः ; सदेश ; संस्कृतपरिषद् ; कोलकाता
- १२) तर्कसंग्रहः ; सन्ध्या राठौर ; मतीलाल बनारसीदास.
- १३) तर्कसंग्रहः ; श्रीकृष्णवल्लभाचार्यः ; चौखम्बा संस्कृत ; वाराणसी
- १४) तर्कसंग्रहः ; अचार्यः शेषराज शर्मा ; चौखम्बा सुरभारती प्रकाश
- १५) तर्कसंग्रहः ; डॉ० राजेश्वरशास्त्री मसलगोंकार ; चौखम्बा
संस्कृत संस्थान ; वाराणसी.

- (१६) तर्कसंग्रहः ; आर. डि. कर्मकारः ; चौखम्बा संस्कृतप्रतिष्ठान.
- (१७) तर्कसंग्रहः ; प्रो. कुपुस्वामी शास्त्री ; चौखम्बा विद्याभवन
- (१८) तर्कसंग्रहः ; V.N. JHA ; OLD CHINMAYA INTERN. FOU
- (१९) तर्कसंग्रहः ; पानाभालि राधाकृष्णन ; सुक्रितिद्रु रिसर्चिन्
- (२०) तर्कसंग्रहः ; डॉ. भूपेन्द्र सिंह परनामी ; खानदेल्छोयाल.पा.
- (२१) तर्कसंग्रहः ; स्वामी विरुपाक्षानन्दः ; श्रीराममठ
- (२२) तर्कसंग्रहः ; आचार्यकेदारनाथत्रीपाठी ; मतीलाल बनारसी
- (२३) तर्कसंग्रहः ; डॉ. दयानन्द भागवि ; मतीलाल बनारसीदास.प्रा
- (२४) तर्कसंग्रहः ; अन्नम्भट्टः ; भाण्डारकार अरियेणाल रीसार्ज, पुणे
- (२५) तर्कसंग्रहः ; डॉ. कांशीरामः ; मतीलाल बनारसी दास. प्रा. लि.
- (२६) तर्कसंग्रहः ; श्रीमत्कारिशर्मणा वङ्गीयेन ; चौखम्बा संस्कृतसंस्थ
- (२७) तर्कसंग्रहः ; श्रीजीवानन्दभट्टाचार्यः ; चौखम्बा संस्कृत सिरीज
- (२८) तर्कसंग्रहः ; श्रीनृसिंहदेव शास्त्री ; मेहरचन्द लछमनदास.प्रा
- (२९) तर्कसंग्रहदीपिकासर्वस्वम् ; आचार्य सन्निधानं सुदर्शन शर्मा
श्री भेङ्कतेश्वरा वैदिक विश्वविद्या-
- (३०) तर्कसंग्रहः ; डॉ. ए. वि. भागसम्पिणे ; पूर्णप्रज्ञा संशोधना
मन्दिरम्.
- (३१) तर्कसंग्रहः ; डॉ. सुधांशु कुमार षडङ्गी ; चौखम्बा स
सुरभारती प्रकाशन ; वाराणसी
- (३२) तर्कसंग्रहः ; डॉ. जीतेन्द्र जैतली ; स्वरस्वती पुस्तक भाण्डारः
आहमेदवाद.

- ३३ तर्कसंग्रहः ; डॉ० पञ्चकुमारमिश्रः ; परिमल पावलिकेशम
- ३४ तर्कसंग्रहः ; आचार्य श्रीनिवास शर्मा ; भारतीय विद्या
संस्थान ; वाराणसी
- ३५ तर्कसंग्रहः ; प. रामचन्द्रः झा ; चौखम्बा संस्कृत सी. आ. वाराणसी
- ३६ तर्कसंग्रहः ; आचार्य बोधिनी-पट्टकृत्या-विरला-इन्दुमती संस्कृतः
चौखम्बा आभारती प्रकाशन
- ३७ तर्कसंग्रहः ; पो. वालशास्त्री ; चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
- ३८ तर्कसंग्रहः ; प्रो. राजनारायणशास्त्री आचार्यः ; चौखम्बा संस्कृत
- ३९ तर्कसंग्रहसर्वस्वम् ; डॉ० विश्वनाथधितालः ; श्रीदक्षिणामूर्ति मठ प्रका
- ४० तर्कसंग्रहः ; अर्कनाथ चौधरी ; जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
- ४१ तर्कसंग्रहः ; अन्नभट्टः ; केरला साहित्य आकादेमी ; त्रिसुर
- ४२ तर्कसंग्रहः ; डॉ० गणेशदत्तशास्त्रिशुक्लः ; शारदा संस्कृत संस्थान
- ४३ तर्कसंग्रह-रहस्यम् ; आचार्य श्रीकीर्त्यनिन्दझा ; चौखम्बा विद्याभवन
- ४४ तर्कसंग्रहः ; ब्रह्मचारिणी गीता वनजी ; चौखम्बा विद्याभवन
- ४५ तर्कसंग्रहः ; डॉ० राजेशकुमारशास्त्री ; भारतीय विद्यासंस्थान
- ४६ तर्कसंग्रहः ; डॉ० राकेशशास्त्री ; चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
- ४७ तर्कसंग्रहः ; डॉ० रामपूजन पाण्डेयः ; भारतीय विद्या संस्थान
- ४८ तर्कसंग्रहसर्वस्वम् ; डॉ० महानन्दः झा ; भारतीय विद्या संस्थान
- ४९ तर्कसंग्रहः ; डॉ० नरेन्द्रकुमारशर्मा ; हंस प्रकाशन ; जयपुर
- ५० तर्कसंग्रहः ; श्री आनन्द झा ; कामेश्वर सिंह दूरसंगा
संस्कृत विश्वविद्यालय ; दूरसंगा